!! श्री हरबी सत्यै नमः !!

# श्री हरबी सती

## मानस मंगल पाठ

卐 नित्य मंगल पाठ 卐

-: रचियता :-

**तेजेन्द्र सिंह चौहान (तेजु भैया)**
मकान नं. 171, शिव मंदिर के पास
फर्स्ट शॉपिंग सेन्टर के पीछे, शास्त्रीनगर, अजमेर (राज.) 305001
मो. 09672280203



Scanned with CamScanner

"श्री गणेशाय नमः"

हे सुखदायक, सिद्धी विनायक, कीर्तन में प्रभु आजा ओ
विनती सुनलो मंगलकर्ता आओ दरश दिखा जाओ

(1)

लम्बोदर हे अष्ट विनायक विघ्नहरण हे भयहारी,
शिव शंकर के पुत्र लाड़ले पार्वती माँ महतारी स्वागत्
करते है सेवक सब उत्सव सफल बना जाओ।
विनती सुनलो .....

(2)

रिद्ध सिद्ध के भरतार पधारो व्याकुलता अति भारी हैं
बुद्धि प्रदाता, भाग्य विधाता, अब दरकार तुम्हारी है,
प्रथम पूज्य हो है वरदायक आकर लाज बचा जाओ
विनती सुनलो .....

(3)

चार भुजा अति सुंदर, मूषक की असवारी है
देवों में प्रथमेश हो भगवन, पूजे दुनिया सारी है।
"तेजू" की अर्जी को मानों आओ जल्दी आ जाओ।

जय दादी की



Scanned with CamScanner

|| जय दादी की ||

## तर्ज :- "घुमर"

म्हें तो पित्तरां की जोत जगावां ऐ मांय–
म्हें तो पित्तरां नित् उठ ध्यावां ऐ मांय –
पित्तर जी सुधारे संगला काम ने –2

1. म्हें तो चौदस री रात जगांवा ऐ मांय –
पित्तर जी सुधारे संगला काम ने –2
2. म्हें तो पित्तरा ने पाटे बिठावां ऐ मांय –
पित्तर जी सुधारे संगला काम ने –2
3. म्हें तो पित्तरा ने स्नान करावां ऐ मांय्–
पित्तर जी सुधारे संगला काम ने –2
4. म्हें तो पांचु ही कपड़ा पैहरावां ऐं मांय –
पित्तर जी सुधारे सगलां काम ने –2
5. म्हें तो रूच–2 भोग जिमावा ऐं मांय् –
पित्तर जी सुधारे सगलां काम ने –2
6. म्हें तो "तेजू" अमर जस गावां ऐ मांय्–
पित्तर जी सुधारे संगला काम ने –2

|| जय श्री राम ||

# श्री हनुमान वन्दना

झालर शंख नगारा बाजे रे।
सालासर के मंदिर में हनुमान बिराजे रे।

भारत राजस्थान में जी सालासर एक धाम,
सूरज स्वामी बण्यों देवरों महिमा अपरम्पार,
थारे लाल ध्वजा फहरावै रे।।1।।
सालासर के ..............................
नारेलांरी गिनती कोनी, बाबा सुवरण छत्र अपार,
दूर देश से दर्शन करने आवै नर और नार,
थारे जात जडूला लागे रे।।2।।
सालासर के ..............................
चैत सुदी पूनम को मेलो, भीड़ लगे अति भारी,
नर–नारी तेरा दर्शन करने आवे बारी–बारी,
बाबो अट्क्या काज संवारे रे ।।3।।
सालासर के ..............................
रामदूत अंजनी के सूत का, धरो हमेशा ध्यान,
में सेवक चरणों का चाकर, लाज रखो हनुमान,
बाबो बेड़ों पार लगाये रे।।4।।
सालासर के ..............................

# "जय दादी की"

## श्री हरबी सती दादी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय)

सकल संसार में भारत को देव भूमि के रूप में जाना जाता है। इसकी गौरव गाथा सम्पूर्ण विश्व में ख्याति नाम है। ना ना समय पर अनेकों अवतार एंव महापुरूषों ने इसी भूमि को अपनी कर्म भूमि बनाया। जिसका मूल परिचायक सदैव असत्य पर सत्य की जीत था। सत्य अर्थात् सत् और इसी सत् की परिभाषा एवं उदाहरण स्वरूप कई शक्तियाँ देव भूमि पर आई जिनमें नारी समाज के उत्थान हेतु विभिन्न रूपों में शक्ति ने भी अवतार धारण किए जिनके सजीव उदाहरण हम सीता, सावित्री, अनसुईया, रूकमणि आदि के रूप में देखते है। इसी भारत भूमि के शेखावटी ऑचल में भी सत्य की ज्योत जलाने के लिए नारी समाज में शक्ति ने कई अवतार धारण किए। विभिन्न कुल एवं परिवारों को सदा सर्वदा से तारती हुई इन्ही महासतियों ने आज भी सम्पूर्ण विश्व में नारी समाज एवं भारत का मान बढ़ाया हे। सर्वप्रथम श्री नारायणी जिन्हें हम श्री राणी सती जी के नाम से जानते हैं एवं उनके बाद उनकी ही कई विभूतियों ने ना ना रूप धारण कर अवतार लेकर कई वंश कुल आदि का उद्धार किया है। उसी क्रम में सिंघल कुल उद्धारिणी श्री हरबी सती जी का भी विशेष स्थान है।



Scanned with CamScanner

जिनका जीवन नारी समाज को एक नई दिशा एवं सत्य सन्मार्ग की प्रेरणा देता है। श्री हरबी सती जी के जीवन पर हम एक संक्षिप्त परिचय लोकमत के अनुसार देने का प्रयास कर रहे है। श्री हरबी जी का जन्म विक्रम संवत् 1460 में ज्यैष्ठ सुदी नवमी को सुजानगढ़ के निकट ग्राम गाड़ौदा के एक सुजान वैश्य कुल में हुआ था। आपका जन्म अपने आप में शक्ति की कृपा का ही वरदान था। आप जन्म से ही नारी समाज एंव संसार के लिए एक उदाहरण बनकर प्रकट हुई, बाल्यावस्था से ही आप कई चमत्कार करती हुई युवा अवस्था को प्राप्त हुई थी सम्वत् 1476 में अपने ही ईच्छा अनुसार पति जो कि फतेहपुर तहसील के जालुका ग्राम के एक उच्च अग्र कुल के थे के साथ शुभ तिथि माघ पंचमी (बसंत पंचमी) को विवाह सम्पन्न हुआ, आपने अपने पीहर तथा ससुराल दोनों ही घर कुल को धन्य कर अपना वैवाहिक जीवन पूर्णनिष्ठा, धर्म व एकाग्र हो व्यक्त किया। लोक कथा के अनुसार एक दफा जब आप अपने मामा की लड़की के विवाह हेतु अपने ननिहाल नवलगढ़ पधारी हुई थी तब विवाह पश्चात् आपको लेने के लिए आपके स्वामी कुँवर जी को आज्ञा दी गई किन्तु फतेहपुर और नवलगढ़ के मध्य घोर बीहड़ जंगल होने के कारण आपके सास–ससुर ने एक ब्राह्मण सूत को उनके साथ साथी बनाकर भिजवाया था, किन्तु होनी बलवान, विधि के विधानवश जो ब्राह्मण कुँवरजी के साथ भिजवाया गया था बीच मार्ग में उसकी बुद्धिमता को लालच हुआ।



Scanned with CamScanner

कुँवर की स्वर्ण से सजी देह तथा साथ ही रथ में रखे वस्त्राभूषणों को देखकर ब्राह्मण सूत अपना आपा खो बैठा तथा उसने समस्त माया आदि को लूटने का प्रयोजन बना लिया। जब कुँवर ने अपने साथी के हृदय में परिवर्तन देखा तो विरोध स्वरूप आपने उससे युद्ध किया किन्तु पापी कुँवर से उम्र में अधिक बड़ा एवं बलवान होने के कारण उस युद्ध में जीत गया। छल से युद्ध जीत कर जब उसने कुँवर पर विजय प्राप्त कर ली तब कुँवर द्वारा प्राण तजने के बाद उसने वही उस घोर बीहड़ के क्षेत्र में एक खैर वृक्ष की मूल में कुँवर की दहे दबा कर ऊपर से त्रंणमूल आदि से उसे छुपा दिया तथा विचार किया कि अब श्री हरबी जी को भी उनके ननिहाल से लाकर उनके भी आभूषण आदि लूट लू। ऐसा विचार कर वो नवलगढ़ पहुंचा वहां पहुंचने पर उसने जैसे ही हरबी बाई के द्वार पर कदम रखा भवन भीतर से श्री हरबी बाई द्वारा विलाप एवं क्रोध वश चीख सुनकर समस्त परिवार व ब्राह्मण भी बड़ा भयभीत हुआ। मामा–मामी ने जब हरबी बाई को इतना क्रोधित देखा तब उन्हें एक कमरे में बंद कर बाहर से सांकल लगा दी। तब श्री हरबी बाई ने निज सत का परिचय दिखलाते हुए द्वार खोल दिया एवं सम्पूर्ण परिवार को ब्राह्मण द्वारा किए गए कुकृत्य का बोध करवाया। श्री हरबी जी की बाते सुनकर उस ब्राह्मण ने घोर विरोध जताया तब निज महिमा दिखलाते हुए आप सारे परिवार व ग्राम वासियों सहित उस स्थान



Scanned with CamScanner

पर जा पहुंची जिस स्थान पर ब्राह्मण द्वारा कुंवर जी की देह छुपाई गई थी। ब्राह्मण द्वारा किए गए कृत्य को देखकर समस्त ग्रामवासियों ने उसे दण्ड स्वरूप मारना चाहा तब श्री हरबी जी ने ब्रह्म हत्या का बोध कराते हुए उस ब्राह्मण को लोगों की पकड़ से मुक्त कराया तथा उसे उसके समस्त पापों का ज्ञान कराते हुए जब मुक्त किया तो वह खुद शर्मसार होता हुआ एक कुएं में कुद गया एवं अपना जीवन समाप्त कर निज करनी का फल पाया। उधर कुंवर जी की देह को देखकर श्री हरबी बाई ने वही उसी स्थान पर सती हो जाने का निश्चय किया तथा उसी खैर वृक्ष के समीप चिता बनवाकर आप सम्वत् 1477 कार्तिक शुक्ल चौदस को कुंवर जी के साथ श्रीधाम को सिधारी। अपने परिवार एवं ग्रामवासियों को विलाप करता देख आपने चिता से उठ कर सबको दर्शन देते हुए सभी लोगों की भ्रांतियों को दूर करते हुए अपने अवतार होने का ज्ञान कराया तथा समाज को नारी को साधारण न मानकर अपितु सत्य की परिचायक मान कर रहने का ज्ञान कराया। आपने सती होते समय सभी को बताया कि नारी जननी है, शक्ति है इसी कारण माँ के लिए उसके सभी पुत्र एक समान हैं किन्त ब्राह्मण द्वारा किए गए ककत्य को एवं मेरी जीवन लीला को याद करते हुए यगों यगों तक के लिए मैं अपनी सेवा से ब्राह्मण जाति को वंछित करती हूँ तथा पीत (पीली) वस्तओं को भी वंछित करती हूँ। तब से लेकर आज तक श्री



Scanned with CamScanner

हरबी जी के मण्ड एवं मंदिर के सेवा ब्राह्मण द्वारा नहीं की जाती किन्तु माँ तो माँ हैं वे सभी का न्याय एवं भरण पोषण एक समान ही करती है। ब्राह्मणों का त्याग श्री हरबी जी द्वारा इसीलिए मान्य है ताकि संसार युगों युगों तक उनकी मंगल कथा को याद करता रहे। जिस स्थान पर श्री हरबी बाई सती हुए उस स्थान के समीप एक खैर वृक्ष था जिसके मूल में कुवंर जी की देह दबा दी गई थी वो वृक्ष आज भी श्री दिशनाऊ शक्ति धाम में मौजुद है। जिसकी परिक्रमा एवं मान्यता से कई प्रकार के रोग बाधा आदि दूर होते हैं। कई वर्षों से लेकर आज तक भी श्री हरबी सती जी अपने द्वार पर आने वाले याचक का लालन–पालन एवं न्याय एक समान करती हैं नारी का सती होना समाज के लिए कलंक की बात है इसलिए हम सती प्रथा का विरोध करते हैं। जो शक्ति नारी रूप में अवतरित हुई तथा नारी समाज को अपनी लीला द्वारा कर्तव्य एवं धर्म परायणता का ज्ञान कराये वो कोई साधारण नारी नहीं हो सकती।

जय दादी की

|| जय दादी की ||

## मंगलाचरण

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नम् कुरू में देवं सर्व कार्येषु सर्वदा।।

राघवं रामचन्द्र च रावणारिरमापतिम्।
राजीवलोचनं रामं तं वन्दे रघुनन्दनम्।।

श्री कृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने।
गोविंदं सकल क्लेश नाशाय श्रीकृष्णाय शरणं ममः।।

मनोजवम् मारूत तुल्य वेंगम्
जितेन्द्रीयम् बुद्धिमताम् वरिष्ठम्।
वातात्मजंम् वानरयुथ मुख्यम्
श्री रामदूतं शरणंम् प्रपद्धयै।।

सर्वमंगल मांगल्यै शिवेसर्वार्थ साधिके।
शरणैय त्रयम्बिके गौरी, नारायणी नमोस्तुते।।



Scanned with CamScanner

# श्री हरबी सती मानस मंगल पाठ

## प्रथम – स्कन्ध

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतो खिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवी चराचरस्य।।

**भाषा – टीका**

शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली देवी, हम पर प्रसन्न हों सम्पूर्ण जगत की माता! प्रसन्न हो! विश्वेश्वरी! विश्व की रक्षा करो। देवी ! तुम्ही चराचर जगत की अधीश्वरी हो।।

**दोहा**

श्री गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मुरती रूप
प्रथम ध्यान धरूं आपका, सब देवन के भूप।।
मात शारदा कृपा करो, बुद्धि करो प्रदान
वरदायनी वरदान दो, सुमती बुद्धि और ज्ञान।।
आदी सती नारायणी, सतियों की सिरमोर
कृपा करो निजदास पर, विनय करूं कर जोड़।।
सब सतियन को नमन है, कर्यों सत्य प्रकाश।
मनोकामना सफल करे, पूर्ण करे सब आस।।



Scanned with CamScanner

मात पिता को नमन है, गुरू कृपा आधार
सब देवन को दास का, वंदन बारम्बार।।
श्री हरबी डाली सती, का यश मंगल गान
पढ़ें सुने धर ध्यान जो, सो पावे वरदान।।
शक्ति शक्ति दो सदा, धन वैभव अरू ज्ञान
कुल देवी की कृपा रहे, मिले सदा सम्मान।।

## चौपाई

जय श्री हरबी सती भवानी, मंगल करणी सकल वरदानी–
महासती पद पायो भारी, पुजत है जग में नर नारी
सत्य पुंज शक्ति की दाता, श्री हरबी डाली सती माता
शक्ति की अवतार सुहाई, ले अवतार धरा पर आई
घर–घर सत् की ज्योत जलाई, कलियुग में प्रगटी महामाई
अंधकार जब–जब जग छाए, तब–तब आकर ज्योत जलाए
पाप बढ़ें हो धर्म की हानी, होत दुखी सुर, नर, मुनी, ज्ञानी
शक्ति ही संकट सब टाले, माता सम बालक को पाले
सत्य रूप उज्जवल अति चमके, सुर्य चंद सम आभां दमके
समय–समय पर आप ही आई, धर्म ध्वजा सत् की फहराई
सतयुग, त्रेता, द्वापर युग में, वही शक्ति प्रगटे कलियुग में।

## दोहा

शक्ति पुंज नारायणी, प्रथम रूप आधार
ममतावश करूणामई, लिए कई अवतार,
आदी सती पद धार कर, करयो जगत कल्याण
नारी को सतधर्म की, शिक्षा दिन्ही आन।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

इसी क्रम में इक रूप सयानो, श्री हरबी डाली सती जानो
भक्तजन हित अवतार सुहाई, सुनहु कथा अब ध्यान लगाई।

## दोहा

दिन बिते कई मास भी, बीत गए कई साल
पर बिते ना सतियों की , महिमा अति विशाल।

## चौपाई

भारत की भूमि अती पावन, धर्म ध्वजा फहरे मनभावन
अगणीत भए अवतार पुनिता, जहां रचे रामायण गीता,
जहॉ नारी सत् की परछाई, सावित्री सीता सम भाई,
राधा रूकमण सम अती रूपा, अनुसुईया वृंदादी अनूपा
कामधेनू, गंगा अती निर्मल, ममताधार बहे नित अविरल
उसी भूमी पर क्षेत्र सुहाना, शेखावटी नाम जग जाना,
जहां सत्य की है परछाई, शक्ति सती रूप जहॉ आई
भारत के कण–कण के भीतर, सतीयन तेज समाया तत्पर
जहॉ–तहॉ कई धाम बने हैं, भक्तों के वहॉ काम बने हैं
उसी क्रम में इक धाम निराला, दिश्नाऊ ईक ग्राम विशाला।

## दोहा

दिश्नाऊ में आए कर, बैठी शक्ति महान
सिंहल कुल उद्धारिणी, श्री हरबी डाली नाम।
गाड़ोद्या कुल जन्म लियो, नारायणी अवतार
अग्रवंश को धन्य कियो, महिमा अति अपार।।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

लक्ष्मणगढ़ और सुजानगढ़ के, मध्य ग्राम गाड़ोदा आया
तेही ग्राम अवतरीत भई माँ, यही स्थान हृदय मन भाया,
वणिक वैश्य कुल अति सुजाना, नगर ग्राम तेजीं सम्माना,
धन वैभव सुख सकल भरे थे, प्रभू कृपा से सुख सगरे थे,
किंतु सुख ना लगे सुखारी, बिन संतान दुखी मन भारी,
रात दिवस बस एक ही चिंता, कृपा करो हम पर भगवंता,
बिना संतान बड़ें दुखियारी, पुष्प बिना सुनी फुलवारी
श्री राणी सती इष्ट सुहावे, नित सुमेर नित् अरजी लगावे।

## दोहा

बिन संतान कहाँ यहां, दम्पती को चैन
नगर ग्रामवासी कहे, राम दिवस कटु बैन
एक दिवस व्याकुल हृदय, माता करी पुकार
कष्ट हरो राणी सती, आन धरो अवतार।

## "माता की पुकार"

सूनी गोद जले बले, ताना मारे संसार
दादी म्हाने धीर बंधा दयो जी

1. बिन फुलड़ा सूनी फुलवारी, लागे ज्यूं विरान
अर्ज सुणों मॉ विनती करूं मै, अब दिजो वरदान
मनसा पुरा दयों म्हारी माय दादी म्हाने धीर बंधा दयो जी

2. इक सुख पीछे, सब सुख झुठा, अब तो सुणों मॉ पुकार
खाली गोद भरो जगदम्बा, आन धरो अवतार,
देवों कलंक मिटाए दादी म्हाने धिर बंधा दयो जी



Scanned with CamScanner

## दोहा

ऐही भांती जब कर करी, सेवक करुण पुकार
प्रगट होए राणी सती, वर दिन्हों तत्काल,
चिंता नहीं चिंतन करो, सुनो बात धर ध्यान,
सत्य ज्योत् फिर से जले, लुंगी मैं अवतार,
देकर के वरदान ये, शक्ति शक्तिमान,
"अेवमस्तु" कह हो गई, शक्ति अंर्तध्यान।

## चौपाई

इस विधी जब मॉ करी पुकार, विनय सुनी शक्ति तत्काल
प्रगट होए फिर कहे भवानी, ध्यान देय सुनलो मम वाणी
तुम्हरी भक्ति से खुश होकर, देती हूॅ वरदान सोचकर
तनिक नहीं मन चिंता लाओ, सुमिरण मेरा करते जाओ
मैं ही विधनाविधी करॉऊ, भाग्य लिखूं मैं ही लिखवॉऊ
जब–जब सत् की हानी होगी, धर्म ध्वजा पर ग्लानी होगी
तब–तब ही मैं दौड़ी आऊॅ, निज भक्तन की आस पुराऊँ
इसीलिए दूॅ ये वरदान, आऊंगी करने सम्मान,
ध्यान देय सुन लो अब दिवसा, देती हूॅ वर जे रखी आसा
ज्येष्ठ सुदी नवमी जब आए, जनम काल यही मन को भाए
तेहीं काल लेऊंगी अवतारा, दूर करूंगी दुख तुम्हारा
पर सुन लो इक बात हमारी, कन्या होगी सतव्रत धारी,



Scanned with CamScanner

## दोहा

भक्त की लाज बचाइए, कृपा सिंधु हे मात्
करूणामई करूणेश्चरी, श्री राणी सती मात्।।

## चौपाई

इसी विधी दिन बितन जब लागे, कहने लगे अब भाग है जागे,
गर्भवती हो गई सेठाणी, सकल गांव में खुशियां आनी
धन सम्पती बढ़ने लागी, घर में खुशियाँ बरसन लागी
दीन दूना बढ़ता व्यापार, वैभव के भरते भण्डार
दिन बिते, बिते कुछ मासा, फलने लगी सकल सुख आसा
आठ मास बिते सुखकारी, अठ मासा पुजे महतारी

## दोहा

धर्म की बेल सदा हरी, कष्ट रहे ना कोए
जब विधना खुद ही लिखे, मेट सके ना कोए
फलीत भया वरदान जो, खुद दिन्यों माँ आय
हर्ष सुमन बरसन लगे, दम्पती मन भाए।
इसी विधी पुरण हुआ, पहला ये अध्याय
कर विश्वास पढ़ें सुने, कष्ट कभी ना आय,
घर सुत सदा खिलायसी, पाठ करे जो कोए
श्री हरबी डाली कृपा से, सुख सम्पती यश होए।



Scanned with CamScanner

!! श्री गणेशाय नमः !! " श्री दादी देव्यै नमः " !! श्री हनुमन्ते नमः !!

# श्री हरबी सती मानस मंगल पाठ

## द्वितीय – स्कन्ध

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

### भाषा – टीका

माँ दुर्गे ! आप का स्मरण करने पर आप सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरूषों द्वारा चिंतन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं दुःख दरिद्रता ओर भय हरनेवाली देवी! आपके सिवा दूसरा कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो।।

### दोहा

आदीश्वरी तेजस्वीनी, महाशक्ति साकार।
युग–युग से मातेश्वरी, धरे कई अवतार।।
एही क्रम में नव चेतना, नवल ज्योती सुखधाम।
श्री हरबी डाली सती, नवल रूप नव नाम।।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

धीरे–धीरे समय बितता, शुभ मंगल होवें समरसता।
सकल अमंगल मिट गई व्याधी, दम्पती होवत बड़ भागी
आदि शक्ति माता सुखकारी, महासती सतव्रत धारी,
भक्तजन के हित आई मैया, भाग्य रचावै भाग्य रचैया,
एहीं विधी जब दिन बितन लागे, ग्राम गाड़ौदा दीपक जागे,
बिते शुभ नव मास पुनिता, सकल समय सुखमय ते बीता।
सकल देव नभ राह निहारे, कब शक्ति अवतार को धारे
ग्राम गाड़ौदा मंगल बेला, दम्पती घर लागा मेला
चकाचौंध हो गई चहुँ ओरा, बाजे झालर शंख कटोरा
सब देवन जयकार उचारी, जन्म लियो शक्ति सुखकारी।

## दोहा

प्रगट भई नारायणी, नवल रूप को धार
सुखी हुआ परिवार सब, हर्षित हुए अपार।।
ग्राम गाड़ौदा हो रहे, घर–घर मंगलाचार,
नर नारी सब सोचते, हुआ कोई अवतार।।

## "छंद"

बजे ढोल बाजे शहनाई, शंख नगारा बाजे जी।
बरसे सुमन गगन से भारी, देव सकल नभ नाचे जी।।
हर्षित भए सकल नर नारी, प्रगटी मात सुखकारी जी।
लखी सब रूप शक्ति को भारी, जावे वारी–वारी जी।।
ग्राम गाड़ौदा बजे बधाई, हरषे मात् सवाई जी।



Scanned with CamScanner

जन्म लेत ही सब सुख पाए, घर–घर बंटे मिठाई जी।।
सेठ दम्पती अरज गुजारी, पायो परचो भारी जी।
धन्य हुए है भाग्य हमारे, देवी घरां पधारी जी।।
अंधा देखे, गुंगा गाए, पांगलीया दौड़ाई जी।
सकल नगर सुखमय सब किन्हों, दिखलावे सकलाईजी।।
धन्य–धन्य हरबी डाली जी, निज परिचय बतलाई जी।
नर नारी बोले सब जै–जै, आदि शक्ति महामाई जी।।
बाग बगीचे खिल गए सारे, शक्ति कृपा दिखाई जी।
मंगल करणी, हरबी डाली माँ, "तेजू" पाई बधाई जी।।

## जन्म का भजन

गावो रे बधाई, बांटो रे मिठाई,
गाड़ोद्या कुल नौबत बाजे, जनम लिया महामाई .....

1. कई बरसों की कठिन तपस्या का कैसा फल पाया,
   नारायणी की कृपा हुई अंगना में फूल खिलाया
   सूखी बगीया माता पिता की फूलों से महकाई।
   गावो रे बधाई .....
2. सजा है अंगना चंदन पलना झूल रही मॉ हरबी
   सत की ज्योत जलाने आई कलियुग में मॉ हरबी
   देख–देख के प्यारा मुखड़ा, नाचे लोग लुगाई।
   गावो रे बधाई .....
3. सेठ गाड़ौदा जी भी देखो, भर–भर थाल लुटाए,



Scanned with CamScanner

सेठाणी जी ले गोदया में, कितना लाड़ लड़ाए
महामाया का रूप है "तेजू" श्री हरबी सुखदाई।
गावो रे बधाई .....

**दोहा**

देख – देख कहने लगा, हर कोई यही बात।
जन्म लियो जैसे धरा पर, खुद जगदम्बा मात।।
जागी सबकी भावना, है कोई अवतार।
दम्पती मन मगन भए, सुखी हुआ परिवार।।

**चौपाई**

शुभ तिथी मंगलमय शुभ दिवसा, फलिभूत हो गई सब मनसा
मात पिता मन अति हर्षाए, रूप मनोहर कह्यो न जाए
गोद भरी माता मुस्काई, तिन लोग सम्पती पाई
बार–बार बलिहारी जाए, धन्य–धन्य कहती मॉ जाए
सेठ सुनी जब रूदन सयाना, बोले वर पायो मनमाना
भर–भर थाल बधाई बाटे, मंगल गावत किन्नर नाचे,
अंगना में खुशियां सब आई, हिलेमिले सखियाँ सब जुड़ आई
सुरज जी पूजे कर न्हावण, गावे गीत मिल सर्व सुहागण,
चुड़ाकरण की रीत सुहाए, भोजन परसादी सब पाए
नामकरण का भी दिन आया, ज्योतिष को घर मांही बुलाया।

**दोहा**

ज्योतिष बैठा आय कर, पोथी पाना साथ,
लिखने लगा कलम ले हाथों, लिखवाए खुद मात।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

ज्योतिष हर्षित हो बतलाए, जनम कुण्डली देख बताए।
साधारण कन्या मत मानो, है अवतार कोई यह जानो।।
क्या–क्या गुण अब करूं बखाना, पर मेरा है फर्ज बताना,
बड़भागी कन्या है तुम्हारी, निश्चित् है कोई अवतारी।
सब लक्षण शुभ–ही–शुभ पाए, सुनत–सुनत दम्पती मुस्काए,
है विचित्र यह बात हमारी, है विधना की मर्जी सारी।
आनंद मंगल मोद बढ़ाए, जिस घर भी कन्या ये जाए,
अटल भाग्य अति है मनभावन, है कन्या ये अमर सुहागण।
अपने जीवन में कभी ऐसी, जन्म पत्रिका मैं ना देखी,
धन्य–धन्य है भाग्य तुम्हारा, सेठ सुनो यह वचन हमारा।
इसके आगे काल डरेगा, युगों–युगों तक नाम रहेगा,
भाग्य की रेखा अति प्रबल है, सत्य का इसमें कैसा बल है।
जैसे सावित्री सती नारी, वैसी कन्या दिखे तुम्हारी,
शंका तनीक नजर ना आवे, ज्योतिष जी इस भांति बतावे।

## दोहा

अमर सुहागण है कोई, सतियों की अवतार,
योग लगन से निकला है, "ह" अक्षर सुखकार।
अब सुनिए विनती मेरी, कन्या है सुखधाम,
मति अनुसार रखो कन्या का, श्री हरबी अब नाम।

## चौपाई

नामकरण पुरण भयो भारी, हरबी नाम लग्यो सुखकारी,
पलना में झुले महामाया, नवल रूप नव नाम है पाया।



Scanned with CamScanner

स्वप्न दर्श माता को दीन्हा, प्रगट होय कहे वचन प्रवीणा,
जो तुमको वरदान दिया था, भक्ति का सम्मान दिया था।
एहीं करण अवतार बनाई, आई है नारायणी माई,
पुनः बताऊंगी इस जग को , नारी के सत् की सकलाई।
माता अति आनंदित हो के, ले बलिहारी हिए संजोंके,
कौतुक कई सामने आए, शक्ति निज् शक्ति दिखलाए
रूदन करे ना शोर, मचाए, पलना में लेटी मुस्काए,
कन्या है कोई अतिविशेषा, मुखमण्डल उज्जवल शुभ जैसा।

**दोहा**

माता मन में मगन है, शुभ लखी रूप निहार,
पुजन पाठ करे परम, करती जै–जैकार।
हरबी भी अती हो सुदृढ़, माँ का देवे साथ,
पूजा करे राणी सती की, करे सत्य की बात।

**चौपाई**

एहीं भांती हरबी मती आए, माता का भी मन हर्षाए
पुजन भजन अती मन भए, यही खेल हरबी को आए।
नारायणी की है परछाई, श्री हरबी डाली सती माई,
सुमरे पूर्व जन्म सब बातां, सत्य हृदय में सत् भर आता।।
शुक्ल पक्ष के चंदा जैसे, कन्या भी बड़ती कुछ ऐसे,
सात वर्ष की जब हो आई, विद्या अर्जन की मति आई।
औरन के सम गुरूकुल जाऊँ, शास्त्र धर्म शिक्षा कुछ पाऊं,
देख पुत्री की ये अभिलाषा, पिता करे गुरूवर से आशा।।



Scanned with CamScanner

कुण्ठीत नारी के समाज में, विद्या ने कभी मान ना पाया,
किंतु विद्या सबके हित है, कन्या ने सबको बतलाया।
बालकपन में ही मृदुवाणी, बोले श्री हरबी कल्याणी,
भेदभाव अब सकल मिटाऊँ, मैं भी गुरूकुल पढ़ने जाऊँ।।
पिता सुने बातें सब सुख से, जैसी हरबी बोले मुख से,
मैं भी पिताजी पढ़ने जाऊं, सब सखियों को संग पढ़ाऊ।
नारी शिक्षा जो ना पावे, किस विधी फिर समाज बढ़ पावे,
मानों इतना कहा हमारा, पढ़ने का है हृदय हमारा।।
जबहीं सुनी पुत्री की बांता, पिता से युँ कहने लगी माता,
जाओ गुरूकुल लेकर जाओ, नाथ दाखिला तुरंत दिलाओ।
चैत्र शुक्ल एकम् शुभ आई, हरबी डाली पढ़ने जाई,
अति मगन हो शिक्षा पाए, वेद शास्त्र निज मुख बतलाए।
जे गुरू श्री हरबी को पढाए, सुन-सुन उत्तर अती हर्षाए,
कन्या कितनी ज्ञानवान है, अनुपम है विद्या की खान है।।

## दोहा

जाए गुरूकुल में हरबी, महिमा करे अपार,
बिना पढ़ें ही करने लगी, चारों वेद उचार।
होत अचम्भित गुरू सभी, करने लगे विचार,
कैसे इतना ज्ञान पा रही, इक साधारण नार।।

## चौपाई

आप पढ़े सबको पढ़वाए, एहीं विधी कुछ दिन बितन आए
अनुपम बालकपन शुभ लीला, खेल रचावै रंग रंगीला,
माता का भी हाथ बंटाए, निज हाथन सब काम कराए,



Scanned with CamScanner

पनघट पर माता संग जाए, जहाँ जाए सबसे जुड़ जाए,
माटी ला गणगौर बनाए, खुद पुजे सबसे पुजवाए।

## दोहा

आठ वर्ष की जब हुई, हरबी डाली मात्,
सारी नगरी फैल गई, अद्भूत सारी बात।
न्याय करे ऐसा परम, कर ना सके जो कोए,
दुध का दुध, पानी का पानी, क्षण भर में ही होए।

## चौपाई

लेकिन नर तन रूप के कारण, शक्ति रहती बन साधारण
चमत्कार खुद करती जाए, सब किरपा प्रभू की बतलाए,
कितने अंधे नैत्र दिखाए, लंगड़े लुले पग चलवाए
कितनों के व्यापार में मैय्या, उन्नति, लाभ, सफल करवाए।
नगर गॉव आए परदेसी, करती अती सत्कार विशेषी,
घर–घर घुम करे सब पावन, गौड़ौदा नगरी की बेटी।
दिन पर दिन था समय बितता, सकल ग्राम सुखमय से जीता,
वर्ष बितते ऋतुएँ जाती, हरबी डाली बढ़ती जाती।।
जब हरबी भई अमर सयानी, सोलह वर्ष हुई कल्याणी,
माता के मन चिंता छाए, दिन–दिन बेटी बढ़ती जाए।
अब विवाह की कुछ तो सोचो, योग्य बैटी के घर वर खोजो,
सेठ सुनी जब सारी बतीया, कहन लगे देख निज् बिटिया।।
शक्ति का वरदान ये जो थी, उसे पराई करनी होगी,



Scanned with CamScanner

बेटी तो फुलों की डाली, लाड़ प्यार नाजों से पाली,
जिस घर जन्मे जिस घर जाए, दोनों कुल भव पार लगाए।

## दोहा

देख उमर मन भावनी, माता यूँ बतलाए,
सोचो बात विवाह की, वर खोजों अब जाए।
रूपवती जैसे शची, उज्जवल काया रूप।।
वर ढूंढों मन भावना, कामदेव सम रूप।।
एंही विधी मानस का हुआ, दूसरा ये अध्याय,
कर विश्वास पढ़ें सुने, सकल सिद्धियाँ पाए।
हो विवाह में जो देरी, पुत्र/पुत्री के कोए,
बाधा कटे सकल सभी, निश्चित् ही शुभ होए
श्री हरबी डाली करे, पुरण सारे काम,
लक्ष्मी कृपा बनी रहे, वैभव हो उस धाम।

Scanned with CamScanner

!! श्री गणेशाय नमः !! " श्री दादी देव्यै नमः " !! श्री हनुमन्ते नमः !!

# श्री हरबी सती मानस मंगल पाठ

## तृतीय - स्कन्ध

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि में परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

## भाषा - टीका

दैत्यों को मारनेवाली तथा ब्रह्माजी को वरदान देनेवाली देवी! मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो। परमसुख दो, रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो, जय (मोह पर विजय) दो । यश (मोह–विजय तथा ज्ञान–प्राप्ति रूप यश) दो और मेरे काम–क्रोध आदि शत्रुओं का नाश करो।।

## दोहा

कमल फूल सा खिल रहा, हरबी का शुभ रूप,
सुंदर मुखमण्डल भरा, सत्य तेज अनुरूप।

## चौपाई

सुन्दर काया रूप प्रबल है, हरबी में निज सत् का बल है,
चंदा सा मनभावना मुखड़ा, मात पिता के दिल का टुकड़ा।
सोलह वर्ष हुई है आयु, सेठ से सेठानी ने कहा यूं,
अब विवाह की करो तैयारी, कन्या हो गई योग्य हमारी।।



Scanned with CamScanner

बुलवाओं कोई पण्डित नाई, वर घर खोजों अब सुखदाई,
अच्छा कुल सुंदर सुरत हो, विद्यावान, पुरूष मुरत हो।
सुन माता की बातें सारी, पिता करे तैयारी सारी,
भेजी पत्रिका दूत पठायो, पण्डित, नाई को बुलवाय़ो।।
दौनों को योजना बताई, उचित योग्य वर ढूंढो भाई,
कर जलपान चले वो दौनों, घर वर खोजन लागे दौनों।
पण्डित नगर–नगर फिर जाई, घर–घर बात चलावे नाई,
लेकिन सब शक्ति की इच्छा, कहाँ सफलता बिना परीक्षा।।
हार गए जब दौनों भाई, तब महिमा हरबी दिखलाई,
जब पण्डित घर आवत देखा, देखी मुख चिंता की रेखा।
रोक मार्ग में पुछण लागी, श्री हरबी डाली बड़भागी,
पण्डित जी कुछ तो बतलाओं, क्यूं चिंतित होते समझाओ।।
बोलों वो बतलाया जैसा, घर वर मिल ना पाया वैसा,
तब बोली हरबी मुस्काकर, पण्डित जी को शीश नवाकर।
चिंता तनिक ना मन में लावो, ग्राम फतेहपुर को अब जाओं,
सिंहल कुल जालुका नामा, तेही घर जा पूरण सब कामां।।

## दोहा

हरबी की बातें सुनी, विप्र देव धर ध्यान,
बोले धन्य हो बेटी तुम, सुगम कियो सब काम।
श्री गणेश का ध्यान कर, चल दियो विप्र सुजान,
जाए फतेहपुर में ही लिनो, पण्डित जी विश्राम।।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

विप्र फतेहपुर नगरी आए, जहाँ – तहाँ दृष्टी दौड़ाए,
सेठ जालुका घर को जाए, सकल ग्राम में पुछत जाए।
नगर सेठ थे बड़ें महाना, पूजन पाठ करे नित दाना,
ग्राम फतेहपुर किरती छाई, घर–घर उनकी होत बढ़ाई।।
उनके पास गयो फीर ब्राहम्ण, कहन लग्यों बातें मनभावन,
सुनो सेठ अब बात हमारी, फिर कहना जो मर्जी तुम्हारी।
नगर ग्राम गाड़ौदा माहीं, वणीक वैश्य के इक कुल माहीं,
इक कन्या है अती विशेषी, सीता सावित्री सम जैसी।।
मात पिता भी अति महान, भगवत प्रेमी और धनवान,
उनकी इस पुत्री अति प्यारी, हरबी बाई सुता कुमारी।
उनका ही रिश्ता मैं लाया, इसीलिए इस गांव में आया,
रूपवती, गुणवान है कन्या, संस्कार की खान है कन्या।।
क्या तुमको ज्यादा बतलाऊं, गुण इतने क्या–क्या गिनवाऊं,
ऐसा रिश्ता मिल नहीं सकता, कर दो हाँ तुमको यदि जंचता।
पुत्र एक तुम्हरे भी प्यारा, रूपवान, ज्ञानी अति न्यारा,
उसके लिए उचित है कन्या, अन्नपूर्णा जैसी धन्या।।

## दोहा

विप्र बढ़ाई कर रहे, सुनते सेठ धर ध्यान,
ऐसे घर यदि हो विवाह तो, बढें हमारा मान।
इस जैसे समधी मिले, तब रिश्ता बने अटूट,
रिश्तो ये मंजूर है, विप्र करो ना चूक।।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

सेठ गाड़ौदा सम घर पाकर, हो जाऊंगा धन्य दिवाकर,
शीघ्र आप गाड़ौद्या जाओ, ग्राम गाड़ौदा खबर कराओ।
कब बारात हमें है लानी, मास दिवस कहना मनमानी,
बेटे की कुण्डली मंगवाई, पण्डित जी के हाथ थमाई।।
भोजन अति सम्मान कराया, वस्त्राभूषण दान भी पाया,
हो प्रसन्न चले वो उठकर, शीघ्र ही पहुंचे निकट सुजानगढ़।
जाय कहीं बातें सब सारी, अब विवाह की करो तैयारी,
जैसा वर तुमने था चाहा, जैसा घर तुमने था चाहा।
उससे भी बढ़ चढकर पाया, समाचार शुभ में हूं लाया,
अब बिल्कुल ना देर करो तुम, आनंद मंगल हरष भरो तुम।
हरबी मन ही मन मुस्काएं, जब पण्डित सब बात बताए,
नगर फतेहपुर ग्राम महाना, सेठ जालुका वैश्य सुजाना।।
उनका पुत्र बड़ा उत्तम है, हे प्रवीण और ज्ञान सुगम है,
दौनों ही परिवार समाना, संस्कार, धनवान्, महाना।

## दोहा

सुनकर बातें विप्र की, पिता कहे हर्षाए,
मिलवाओं अब कुण्डली, गुण, लक्षण समझाए।
विप्र मिलावे पत्रिका, देख चकित रह जाए,
बत्तीस गुण, लक्षण सभी, दौनों में ही पाए।

## चौपाई

लगन पत्रिका फिर लिखवाई, भुवा नणद सगरी बुलवाई,
सात सुहागण गॉ की आई, सखियां सारी दौड़ी आई।



Scanned with CamScanner

कर विचार सब लोग लुगाई, इस शादी की हॉमी पाई,
पत्र देय इक दूत पठाया, नगर फतेहपुर को भिजवाया।।
पाय पत्र खुशियॉ सब छाई, अब गुंजेगी शुभ शहनाई।

## दोहा

श्री हरबी डाली सती, खुब लियो अवतार,
दौनों घर में होन लगे, विधिवत् मंगलाचार।
श्री गणेश को ध्यान कर, लियो प्रथम बुधवार,
पीला चावल कर प्रथम, हाथ लियो शुभ ब्याह।

## चौपाई

सारी नगरी खबर कराई, हरबी की शादी है भाई,
कोई कमी ना रहने पावे, नर नारी सब ही बढ़ आवे।
गाड़ौदया की बेटी प्यारी, गाड़ौदा कुल राजकुमारी,
अब घर गॉव सजावों भाई, ब्याह करेगी हरबी बाई।
टिका, टेवा रित निभाई, गीत लुगायाँ घर की गाई,
माया पाटा देव बिठावे, गजानंद को ध्यान लगावे।।
शुभ मंगल शुभ समय है पाया, बैठाई आंगण में माया,
हंसी ठिठोली गुंजन लागी, गीत लुगायां गावण लागी।
पीसण, पोवण, सिमण लागे, घर आंगण में मेला लागे,
सखीयॉ छेड़े करे हंसाई, शरमावे हरबी महामाई।।

## दोहा

आओ हरबी बाई का, करल्यो सारा चाव,
झुमो नाचो हर्ष बधाई, ढोली ढोल बजाव।



Scanned with CamScanner

माया पर पानो चढ़े, देव गजानंद आए
सखीयॉ, नेग चार में लागी, गीत लुगायां गाए।।

## "विनायक जी"

रणत भँवर सु बेगा आवो जी, बिंदायक,
चौखा सा लगन, लिखावों जी, म्हार देव जी बिंदायक।
सुण्ड–सुण्डाला बाबा दुंद –दुंदाला,
ओछी पिण्डीया रो कमण गारो जी,म्हारा देव जी बिंदायक।।
हरबी बाई रो बाबा ब्याव मण्ड्यो है,
चौखा से बनड़ी परणावा जी, म्हारा देव जी बिंदायक।

## दोहा

शुभ लग्नों में मात पिता, माया ली बैठाए
विधि विधान से पुजन करो, पण्डित आ करवाए।
चाली फिर सेठानी जी, ले गुड़ गोला हाथ,
जाए नवलगढ़, भाई के, मंगल करे अपार।।
ब्याह रच्यौ है हरबी को, सब विधी मंगलाचार,
भारत भरण आना भाई, लाना सब परिवार।

## "भात के लिए आमंत्रण"

बहन विनंती करे भैया, समय पे भात ले आना,
है मंगल की परम बेला, चुनड़ आकर उढ़ा जाना।

1. ससुर के सास के कपड़े, जेठ जी देवर के कपड़े
जेठानी, देवरानी के कड़े सोने के ले आना.....



Scanned with CamScanner

2. यही विनती है बस तुमसे, यही अरजी है बस तुमसे
बहन का मान रख लेना, जल्द ससुराल आ जाना....

## "गीत भात का"

बीरा म्हारे रिमक झिमक भत्ती, आज्यो
थे आज्यो रिद्ध सिद्ध ल्याजो जी
बीरा म्हारे आज्यो भावज ल्याजो
संग लाल भतीजा गोदी ल्याज्यो जी
बीरा नौ लख हीरा चुनड़
भरी सभा में आन उढ़ाइज्यो जी
सुसरा जी के पचरंग पगड़ी
सासु को बेस सिमाइज्यो जी
बीरा साजनसा रे सुट सिमाइज्यो,
हिरा मोत्यां को हार म्हारे लाइज्यो जी।

## दोहा

जाए नवलगढ़ में माता, देय निमंत्रण आए
भात भरण को आइये, भाई को समझाए,
भाभी जी आशीष दे, कहे नणद से बात,
चिंता मत करो बाईसा, होगी सब शुभ बात।

## चौपाई

भात न्युत निज घर को आई, चाक पुजने की घड़ी आई,
बिच चौक में थान लगाया, मण्डप के हित बान बिठाया।
बिंदोरी के गीत गवाए, घी, गुड़ प्रातः रोज पिलाए।



Scanned with CamScanner

बाजे ढोल, नगाड़ा, थाली, चाक की पुजा को मॉ चाली,
कुम्हारी के चाक पुजाए, वस्त्र देय कर नेग चुकाए।
मंगल कलश उठाकर ल्याई, देवर, जीजा करे अगुवाई,
इस विधी चाक की रस्म निभाई, बित्यों दिन संध्या घिर आई।।
भात मायरा लाए भाई, सुन्दर रीत निभावे भाई
तिलक किया, भाई भाभी को, चौक बीच राख्यो डाबी को,
सारा घर परिवार हे आया, माता का जी भर–भर आया,
धन्य हो भैया आप जो आए, आय बहन के भाग जगाए
हाथ जोड़ बोली सेठानी, आओ अब है रीत निभानी
इक–इक कर पाटे बैठाए, तिलक लगाकर भेंट दिवाए,
घर की सखीयां मंगल गाए, आया भाई मन मुस्काए।

## "भात भरने का गीत"

आयो मेरी मॉ को जायो बीर चुनड़ लायो रेशम री,
नापुं तो हाथ पचास, तोलू तो तोला तीस की जी,
मेलूं तो डाबी भर जाए, परखूं तो बिस्वा बिस की जी।
ओढूं म्हारी हरबी रे ब्याव, पल्लो तो राखूं छिटकत जी,
देखे म्हारो सारो परिवार, जानी तो देखे मुलकत जी।।
दैखे म्हारा देवर जेठ, साजन आवे मुलकत जी,
धन है गोरी तेरा भाग, बीरा जी ल्याया चुनर जी।

## चौपाई

भात मायरा लाए भाई, आंगन बीच करी पहुंनाई,
माता अपना भाग सरावे, चुनड़ पहने गाए बधावे,



Scanned with CamScanner

खुब नवलगढ़ वाला आया, भर–भर गाड़ों भात है ल्याया,
सकल ग्राम गाड़ौदा माँही, भात की खुब प्रशंसा छाई,
बहन भाई के तिलक करायो, शरबत ठन्डो लाय पिलायो,
धुमधाम से हुआ भात जब, घिर आई मेहन्दी की रात तब,
ढोली ढोल बजावे भाई, नाचे घर के लोग लुगाई।

## दोहा

बित गई जब रात तो, आई नवल प्रभात
सर्व सुहागण तेल चढ़ावे, ले शुभ दूर्वा हाथ।
चंदन को उबटन बन्यो, बेसन हल्दी साथ,
दही से धोवे माथे बाई को, मामा मामी साथ।।

### "गीत हल्दी का"

म्हारी हल्दी रो रंग सुरंग निपजे मालवे,
कंचन बरणी केसरी जी, या तो आवे–आवे बहुत सुगंध
निपजे मालवे .....
या हल्दी बिन्दायक जी मुलाई बाई रिद्ध सिद्ध रे मन कोड,
निपजे मालवे .....
या हल्दी बन्नी रा बाबा जी मुलाई, बाई री मायड़ रे मन कोड़,
निपजे मालवे .....
या हल्दी सब देव मुलाई सगली देव्यां रे मन कोड़,
निपजे मालवे .....

## दोहा

तेल चढ्यों शुभ बेला में, निखर गयो सब रूप,
हल्दी पिठी खिल रही, हरबी खिले स्वरूप।

Scanned with CamScanner

न्हाय धोय सब निसर्‌या, सखीयॉ बैठी साथ,
पाटा पर बैठाए के, मेहन्दी माण्डे हाथ।।

## "मेहन्दी का गीत"

सरब सुहागन मिल मन्दिरिये में आई।
तो दादीजी के हाथ रचाई जी या मेहन्दी।।
सोने की झारी में गंगाजल ल्याई।
तो कंचन थाल घुलाई जी या मेहन्दी।।
चांदी की चौकी पर चौक पुरायो।
तो दादीजी बैठ मण्डाई जी या मेहन्दी।
लाल सुरंगी मेहन्दी हाथॉ राची।
तो दादीजी न बहुत प्यारी जी या मेहन्दी।।
चरण धोय चरणां में लागी।
तो आशीष ले घर आई जी या मेहन्दी।।
अन्न धन लक्ष्मी भोत घणा दे।
म्हारा टाबरिया की वेल बढ़ाई जी दादी जी।।
दया दृष्टि कर दो दादीजी की
थारा टाबरिया मिल सब गाई जी या मेहन्दी।।

## दोहा

माण्डी मेहंदी चाव से, राच्या सुंदर हाथ,
बाई तो बनड़ी बणै, हरखे पिता और मात।
कर सोलह श्रृंगार ने, चुनंड़ देई उढ़ाए,
बन दुल्हन हरबी दिखे, सुंदरता कही ना जाए।।



Scanned with CamScanner

इसी प्रकार होवे सभी, विधिवत् मंगलाचार,
कुँवर बन्ना बनड़ा बणे, हर्षे सब परिवार।
तेल चढ्यो हल्दी हुई, मेहन्दी ली मण्डवाए,
हरबी ने लेवण चाल्या, बनड़ा जी मुस्काए।।

## चौपाई

आओ अब धर ध्यान सुनो जी, नगर फतेहपुर ग्राम चलो जी,
सेठ जालुका जी घर माई, कुँवर बने है दुल्हा भाई।
मात भाभियॉ लेत बलाई, दुल्हे के हित घोड़ी आई,
सज धज कमर बांध तलवार, पेचा, मोर, किलंगीदार।।
सार भाभियाँ काजल, आई, लेती है दुल्हे की बलाई,
माता छाती लिया लगाई, करे नेग और दुध पिलाई।।

卐 卐

## दोहा

घोड़ी पूजे चाव से, आई घर की नार,
दरवाजे घोड़ी खड़ी, गावे मंगलाचार।

जय दादी की

## "गीत-घोड़ी एवं बनड़ा"

पचरंग पाग किलंगीदार, कमर बांधकर के तलवार
घोड़ी उपर होए असवार, चाल्यो बनड़ी लेवण ने।

1. घोड़ी खूब रूपाली जी, नाचे नौ–नौ ताली जी,
कुंवर बण्यो बनड़ों प्यारो, ले चाली मतवाली जी,
घणा बाराती सब परिवार, नाचे देखो सब नर नार।
चाल्यो बनड़ी लेवण ने .....

Scanned with CamScanner

1. मखमल जीन कसाई जी, रेशम डोर बंधाई जी,
छम–छम करती चाली जी, नगर फतेहपुर वाली जी,
भाभी बहना नगर उतारे, बनड़ों भी बैठ्यो मुसकावे,
चाल्यो बनड़ी लेवण ने .....

2. आज घड़ी शुभ आई जी, गुंज उठी शहनाई जी
नगर, ग्राम सब धन्य हुयो, मोहरां खुब लुटाई जी,
'तेजू'' जोड़ी सब मन भाई, जुग–जुग ज्योत जले सकलाई।
चाल्यो बनड़ी लेवण ने .....

## चौपाई

ग्राम फतेहपुर के नर नार, सज धज कर होकर तैयार
सेठ जालुका जी के सागे, बन बाराती चाले आगे।
बाजे ढोल, बाजे शहनाई, ग्राम गाड़ौदा सीमा आई,
नाई ब्राह्मण आगे भैज्यो, आ गई जान खबर करवाई।।
सुनकर खबर, खुशी सब जागे, खातिरदारी को सब भागे,
सेठ चले करने अगुवाई, सुंदर जनवासे ठहराई।
खूब खातिरी करी है भाई, कमी कोई रहने ना पाई,
सभी बाराती करे आराम, कुंवर बन्ना भी करे विश्राम।।
टिको कर समधी उठ धाए, पड़लो हरबी के हित लाए,
सेठ भीजायों पड़लो भारी, देखण लगी लुगायां सारी।
संध्या पूर्व पुनः सब जागे, बाराती बारात में लागे,
सुन्दर सजवायी है नगरी, देखे दुल्हा सारी नगरी।
नाचे झूमें सभी बाराती, दुल्हे के सब संगी साथी,
सासु आरती लेकर आई, दरवाजे बारात जब आई।।

## "तोरण"

तोरण आया राइवर थर हर काप्यां राज,
पुछो सिरदार बनी ने, कामण कूंण कराया राज।
म्हें काई जाणा म्हारा, जोशी कामण गारा राज,
जोश्यां रो नेग चुकास्यां कामण ढिलो छोड़ों रोज।।
म्हे काई जाणां म्हारा, नाई कामण गारा राज,
नायां रो नेग चुकास्यां कामण ढिला छोड़ों राज।
हरी कुकड़ी निलो सूत, जाय बांधु नाचण को पूत,
एक सलाम भाई, दूसरी सलाम,
तिसरा सलाम थारा बाप की गुलाम,
जद म्हारा कामण सांचा राज।।

## "कामण"

बनो कांकड़ आए बिराज्यो जी रस कामणीया
बनो तोरण आय बिराज्यो जी रस कामणीया.....
बनो फेरा आए बिराज्यों जी रसो कामणीया .....
बनो थापां आए बिराज्यों जी रस कामणीया .....
बनो महलां आए बिराज्यो जी रस कामणीया .....

## दोहा

रीत हुई पूरण सभी, दिन्हो तोरण मार,
सासु जी आरती करे, कामण गावे नार।

Scanned with CamScanner

हंसी ठिठोली कर सभी, मेहला भीतर लाए,
हरबी बाई शरमाकर, वर माला पहनाए।।
कुंवर रूप को निरखकर, सखीयाँ छेड़े आज,
जीज़ा के घर जायकर, करेगी बहना राज।

## चौपाई

सब दस्तुर हुए शुभ भाई, अब फेरों की बारी आई,
माघ शुक्ल शुभ पंचमी आई, गोधुली का समय सुहाई।
मण्डप सुंदर है सजवायो, ला बनड़े ने है बैठायो,
हरबी बनड़ी बणकर आई, शोभा परम ना वरणी जाई।।
विप्र पिता माता संग आवे, नवग्रह, देव गणेश पुजावे,
पुजन करें सेठ सेठाणी, मंत्र पढ रहे पण्डीत ज्ञानी।
पूजा जब विधी पूण कराई, फेरा होवे अब सुखदाई।

## "गीत-फेरों का"

पहलो फेरा हरबी बाई लिन्यो,
तो बाई दादो जी ने प्यारी हो राम,
रूपिया खुब लुटाया जी राज,
दुजो फेरों हरबी बाई लिन्यो,
तो बनड़ी बापू जी ने प्यारी हो राम,
अन्न धन खुब लुटाया जी राज।
तिजो फेरा हरबी बाई लिन्यो,
तो हरबी मायड़ ने प्यारी हो राम,
मोहरां, मोती लुटाया जी राज,

जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की

Scanned with CamScanner

चौथो फेरो बनड़ों जी लिन्यो,
तो बाई सा हुई पराई हो राम,
सखियां भाग सरायो जी राज।।

## दोहा

इस विध जब पूरण हुए , मंगल फेरे सात,
वचन बंधाए दोनों से, दियो हाथ में हाथ।
पान सुपारी लेयकर, किन्यो कन्या दान,
दम्पति मन मगन भए, हृदय हर्ष महान्।।
फेरों से उठकर प्रथम, ली सबकी आशीष,
अमर सुहागण रहो हे बेटी, कृपा करे जगदीश।
सखीयॉ बोली दुल्हे से, लेवो नेग चुकाए,
आता जाता हो कुछ तो, देवो श्लोक सुनाए।।

## "श्लोक"

हरबी म्हारी सुवासणी, साल्यां फुल गुलाब,
शोभा वरणू क्या भला, धन्य हो गया भाग।
ससुर पिता सम पाईयां, सासु जैसे मात,
धन्य हो गयो पाए कर, मैं हरबी को हाथ।।
सुण्या श्लोक जब, सब कोई, नेग चुकायो मात,
दिया आशीष बण्यो रवै, जन्म–जन्म रो साथ।

## चौपाई

सुनकर श्लोक सभी हर्षाए, सासु साली नेग चुकाए,
अब माया के पास पधारो, आकर के कारज सब सारो।

Scanned with CamScanner

थापां धोक दिलावे माई, गावे घर की गीत लुगाई,
नेग करे जुवे का प्यारा, ऐल खेल कई न्यारा–न्यारा।।
कुंवर कलेवा करो तैयारी, गाली गावे सखियाँ सारी,
सज्जन गोठ समधी जी आए, गीत नारीयां मिल कर गाए।

## "सीठणा"

म्हारे ये पिछोकड़ गीता ए बचत है,
जे कोई सुणबां आवे जी हरी को।
सुणबा तो आवे म्हारे, कुँवर का दादा,
सुण–सुण ज्ञान बढ़ावे जी हरी को।।
सुणबा तो आवे म्हारा, बन्ना सा रा बापू,
सुण–सुण ज्ञान बढ़ावे जी हरी को।।
सुणबा तो आवे रे फतेहपुर वाला,
सुण–सुण ज्ञान बढ़ावे जी हरी को।।

## दोहा

सेठ गाड़ौदा कर रहे, सब ही विधी मनुहार,
समधी जीमे, पकवानी, ले ले कर चंटखार,
बरफी, पेड़ा, इमरती, घेवर, लड्डू चार,
साथ रख्यो घी चूरमो, खीर थी केसरदार।

## "कलेवे का गीत"

धोया–धोया थाल परोस दिया भात जी,
आवो–आवो बींद राजा काँसे घालो हाथ जी।

Scanned with CamScanner

कांसे घालो हाथ बताओं थांकी जात जी,
बाप म्हारो राजा जी, माय पटराणी जी।।
भाई म्हारां चौधरी, बैठे पंचा माय जी,
भाभी बहना सोहदरां रसोइयां के माय जी।

## दोहा

कंवर कलेवा हो गया, सज्जन गोठ मनवार,
सेठ गाड़ौदा करे बड़ी, सबकी जीमणवार।
माता हरबी बींद ने, ला पाटे बैठाए,
हर्षित बोले सेठ से दो, पेहरावणी कराए।।

## गीत- पेहरावणी

दादी ओढले टाबरिया थारी चूनड़ लाया ए दादी ओढले।
चूनड़ लाया ए भवानी थारी चूनड़ लाया ए दादी ओढले।।
कोई तो लावे मैया सोने रो छत्तर।
म्हें टाबरिया लाल सुरगी रोली लाया ए।
दादी ओढले.....।।1।।
कोई तो लावें मैया हीरा री नथली।
म्हें टाबरिया घणी राचणी मेहन्दी लाया ए।।
दादी ओढले.....।।2।।
कोई तो चिणावे थारो मन्दिर देवरो।
म्हें टाबरिया सवा रूपयो, भेंट में लाया ए।।
दादी ओढले .....।।3।।

जय दादी की

Scanned with CamScanner

कोई तो बैठावे थाने स्वर्ण सिंहासन।
म्हें टाबर थानै मात समझ कर दिल मँ बैठाया ए।।
दादन ओढले .....।।4।।

**दोहा**

खुब हुई पेहरावणी, मोहरां रूपया हाथ,
साँख भरी सब निसर्या, मायड़ बापू साथ।

**चौपाई**

पलंगचार कर गीत निभाई, मंगल गीत हुए सुखदाई,
दोनो समधी गले मिल रहे, मिलनी करी हरख मन भाई।

**दोहा**

इस विधि सब पूरण हुई, शुभ विवाह की रीत,
हरबी देहली पुजती, सखीयाँ गावे गीत।
समधी कहे विदाई दो, हमको सहज नवीन,
समय विदाई का हुआ, हुवे सभी गमगीन।
मात पिता से मिल रही, हरबी नैणा नीर,
झुरझुर रोवे सखीयाँ सारी, मामो देवे धीर।

**'गीत-विदाई''**

तु बैठ पालकी हरबी बाई, कुंवर जी के संग आज चली
सुना सा हुआ आँगन माँ का, वीरान हुई बाबुल की गली।टेर।



Scanned with CamScanner

अब किसका लाड लडाऊँ मैं, किसे मन की बात बताऊँगी
मैं हाथ फिरा किसके सिर पे, आँचल में अपने सुलाऊँगी
माँ की आँखे झर–झर रोये, बाबुल की छाती आज जली।।

बेटी तो पराई अमानत है, एक दिन लौटानी पड़ती है
मैके से उसकी डोली उठे, ससुराल से अरथी उठती है
अब 'हर्ष' तेरा पीहर छुटा, आबाद रहे साजन की गली।।

हे सुरज विनती है तुमसे, कहीं ज्यादा ताप नहीं करना
तेरे तेज से ना कुम्हला जाए, फुलों सी कोमल है ललना
हे बादल तुम छाए रहना, मुरझा ना जाए मेरी कली।।

## चौपाई

सब विधि अब आशीषां पाई, सेठ गाड़ौदा करे विदाई,
सखी सहेल्या रोवण लागी, बाई पराई होवण लागी।
माता अपने हिए लगाए, पीहर की सब सीख सुझाए,
मात पिता का मान बढ़ाना, बेटी अपना फर्ज निभाना।।
सासरीया है तेरा प्यारा, पीहर के जैसा ही न्यारा,
सुन्दर सी डोली सजवाई, सारी नगरी घिर है आई।
सीख बधाई सबकी पाई, डोली बैठे हरबी बाई,
चढ़ डोली दुल्हनीया चाली, बनड़े के मनभावन वाली।।

## दोहा

विदा करा बारात को, आए फतहपुर ग्राम,
द्वार पे बनड़ा आय कर, कर्यो प्रथम प्रणाम।

Scanned with CamScanner

माता आरती थाल ले, करती मंगलाचार,
नणदल बाई बोली, भैय्या, दे दो मोहरां चार।।

## चौपाई

हरबी घुंघट में शरमाए, सासु आरती थाल सजाए,
गीत लुगायां गावण लागी, भाभ्यां नेग चार में लागी।
कनु थाल की रीत कराई, घी गुड़ माही हाथ घलाई,
जुवा–जुवी के खैल करावे, माया थापां धोक दिलावे।।
राती जुगाकरे सुखदाई, परिवार में खुशियाँ छाई,
इसी प्रकार बिते दिन चार, पीहर से आया लणीहार।
सांस ससुर की आज्ञा पाई, पग फेरां को चली बाई,
कुँवर बना भी अती शरमाए, जी भरकर अभी देख ना पाए।।

## दोहा

उठवाई माया तणी, गोठ करे सब कोए,
गणपति जी आनंद करे, सीमरयां से सुख होई।
साजन जी री जीवजड़ी, पाछी पीहर आए,
बिन साजन ना जीव लगे, याद कुँवर की आए।।,
हुआ पूर्ण मंगल मानस का, तीसरा ये अध्याय,
पढ़े सुने धर ध्यान जो, सकल सिद्धीयाँ पाए।
अति संक्षेप विधी रच्यो, यह विवाह सम्वाद,
लिखवायो हरबी बाई, कलम पकड़ निज हाथ।।
श्री हरबी डाली सती, जपो सुबह और शाम,
अन्न, धन, यश, देवे सती, कोटि–कोटि प्रणाम।


Scanned with CamScanner

# श्री हरबी सती मानस मंगल पाठ

## चतुर्थ – स्कन्ध

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वाथसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तु ते।।

### भाषा – टीका

नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलदायी हो, कल्याणदायनी शिवा हो, सब पुरुषार्थो को सिद्ध करने वाली, शरणगतवत्सला, तीन नेत्रोंवाली एवं गौरी हो। तुम्हे नमस्कार है।

卐

### दोहा

हरबी बाई आ पीहर, सखीयाँ में रम जाए,
पर बिसरे ना सासरो, दादी कुँवर की आए।
बित्या मास पुनित शुभ, होली खेलण जाए,
पिता मण्डाई गौरजा, पुजणीयो मन भाए।।
अमर सुहाग करे सदा, इसर गौरा मात,
पुजे हरबी गणगौरयां, फुल दूब ले हाथ।

### "गणगौर का गीत"

गोर ऐ गणगौर माता खोल किवाड़ी
बायर उभी थारी पुजण वारी



Scanned with CamScanner

पुजो ऐ पुजावो बेणा कांई वर मांगा
अन्न मांगा धन मांगा लाछर लिछमी
कान कँवर सो बीरो मांगा राई सी भोजायी
जल भर जामी बाबुल मांगा रातां देई मायड़
पोवता सीमता दिन दस लागा
देखो ऐ भतीजो थारी भुआ लाई बागा
भुआजी रे कारणे भतीजा रेग्या नागा
नागा नागा के करो थाणे और सीमस्या बागा
वरदानी माँ वर दीज्यो मैं थारे पगां लागां
म्हारा हर्या रे ज्वारा रे, कै गेहूँ ला सरस भर्या
गोरां ईसरदास जी बाया रे, कै बहू गोरल सींच दिया
म्हारा नौलख गैणा ऐ, कै गोरल पैर लिया
म्हारी राचणी मैंहदी ऐ, के बहू गोरल मांड लिया
म्हारी चटक चुनड़ी ऐ, के बहू गोरल ओढ़ लिया
म्हारी हर्या रे जवारा रे, कै गहूँ ला सरस भर्या

## दोहा

पुजी बाई गौरजा, पुजवाई हे मात्,
सिंजारे बुलवायो बनड़ो, लेबां ताई साथ।
करी विदा गणगौर ने, हरबी हरख बधाव,
कुँवर बन्ना रे सागे जावे, सासरीये रो चाव।।

## चौपाई

सोलह दिन गणगौर पुजाई, पुजी हरबी घणी सवाई।
सिंजारे पर कुँवर पधारे, हरबी देख–देख मुस्कावे।।



Scanned with CamScanner

गणगौर्याँ की करी विदाई, सासरे आई हरबी बाई।
सासु के मन चाव घणेरो, हरबी ने रखे हद नैड़ो।।
बोले घर परिवार या वाणी, आई है दुल्हन गुणवानी।
मंगल बेला उठे संजोई, घणी बनावे स्वाद रसोई।।
सास ससुर अती स्नेह लुटाए, लक्ष्मी जैसी बेटी पाए।
सभी बड़ों को आदर देती, सबसे मीठी वाणी कहती।।
पुजन भजन करे सुखदाई, सबने भावे हरबी बाई।
साजन ने ईश्वर सम राखे, सागे रैवे बण परछाई।।
ज्ञानवती है रूपवती है, सीता सम कोई महासती है।
सबसे प्रेम बढावे हरबी, सबके ही मन भावे हरबी।।

## दोहा

घर में चरण रखे जभी, नवनित् मंगल होए,
खुब बढ़े व्यापार भी, अन्न, धन और यश होए।
ग्राम फतेहपुर जालुका, चर्चा छाई घोर,
कुँवर बन्ना की बिनणी, दंका बाजे डंका जोर।।

## चौपाई

घुंघट की मर्यादा राखे, काण कायदो सारा राखे।
हर मुश्किल में सीख सुझावे, सारी मुश्किल हल करवावे।।
सबको ज्ञान की देती शिक्षा, सबकी पुरी करती इच्छा।
रोग, शोक को दूर भगाती, निज सत् के परचे दिखलाती।।
दूर–दूर तक किरती छाई, शक्ति रूप है हरबी बाई।
नगर ग्राम के लोग लुगाई, करते सब हरबी की बढ़ाई।।



Scanned with CamScanner

धन्य हो गया कहे कुँवर सा, एहीं प्रकार बिते कुछ मासा।
पहला सावण जब आया, मात पिता लेवण ने आया।।
समधी और समधण जब देखा, करी खातरी अति विशेषा।
सास कहे मेरो मन ना लागे, पा हरबी को भाग है जागे।।
धन्य–धन्य है मात पिता को, जन्म दियो ऐसी सीता को।
सुन–सुनकर माता सुख पाए, पिता भी हर्षे हिए लगाए।।
धन्य धन्य हरबी महामाया, मात पिता का मान बढ़ाया।
अब चलने की करो तैयारी, रस्ता देंखे सखीयाँ सारी।।
सास ससुर की आज्ञा पाई, नगर गाड़ौदया चाली बाई।
बहुत याद आवे हरबी की, दे दिजो इतनी अनुमति जी।।
अब कुछ मास रहे घर अपने, हमने ये देखें है सपने।
सास ससुर से आज्ञा पाई, मात पिता संग निज घर आई।।
सखीयाँ सारी दौड़ आई, आज हमारी हरबी आई।

## जय दोहा की

गले मिल रही इक–इक कर, सखीयाँ की भर बाँथ,
आदर देवे सब घर को, जोड़े दौनो हाथ।
दिन बिते कुछ वक्त भी, मेघ गर्जना आए,
ऋतु छाई मनभावणी, सावण महिनो आए।।
सावण रां हिण्डा पड़े, जावे सखीयाँ साथ,
बन उपवन हरियो भर्‌यो, झुल हरबी मात।



Scanned with CamScanner

# "गीत - सावण का"

(तर्ज – बन्ना रे...)

मैया ऐ, सावण महीणो आया–2
कोई झुलणे की–2 रूत है आई म्हारे हिवड़े री कोर–2।।
मैया ए, हीवड़ो घणो हर्षायो–2
कोई छम–छम –2 करतो नाचे म्हारे मनड़ा रो मोर–2।।

(तर्ज – पल्लो लटके)

सावन बरसे, सुरंगो सावन बरसे–2
की हीण्डो, हिण्डे दिसनाऊवाली, म्हारो हियो हरषै।।
चांदी के पाटे बांधी जी, रेशम की एक डोरी
होले–होले भगतां झलावे, झुले दादी म्हारी
की हिण्डो, हिण्डे दिसनाऊवाली, म्हारो हियो हरषै।।

## दोहा

ग्राम फतेहपुर से आयो, सिंजारो मन भाय,
लाडु घेवर और लहरीयो, हरबी के मन भाए,
केसर की फिणी घणी, दाख छुआरा साथ,
पुजे तीजां संग सहेली, हरबी डाली मात।



Scanned with CamScanner

# "तीज के सिंजारे का गीत"

हो जालुराम जी के घर सुं आयो लेरियो हरबी तो ओढ़े चाव सूँ,
या तो अमर सुहागण म्हारी मात सेठाणी ओढ़े चाव सूँ।

1. पहला–पहला सावनीया री आई तीज निराली,
   पहलो है सिंजारो बाई को करो सभी तैयारी,
   हो सुगणी मेहंदी रचावे दान्यु हाथ हरबी तो घणा चाव सूँ।
2. नौलख हार गला को आयो, संग हीरा को जेवर,
   खाजा, फुल, खोपरा आया और रबड़ी को घेवर,
   हो बैठी पाटा पे तिलक कराए, हरबी तो खावे चाव सूँ।
3. सज धज कर के हरबी म्हारी, तिजां खेलण जाए,
   पैर लहरीयो कुँवर बन्ना रो, सखीयाँ में इतराए,
   रे "तेजु" महिमा तो अपरम्पार सिंजारो गावे चाव सूँ।

## चौपाई

धुमधाम से तीज पुजाई, तीजां री आशीषां पाई,
युग–युग की ये रीत निभाई, पहलो सावण लियो बिताई।
सावण बित्यों मास पुनीता, देखत–देखत मास ये बीता,
कुँवर बन्ना लेने को आए, ग्राम फतेहपुर लेकर जाए।।
बिन हरबी के जी ना लागे, हरबी बिन घर सुना लागे,
मात पिता ने है बुलवाया, एही कारण लेने को आया।
माता देख जमाई आया, घर परिवार सहज बुलवाया,



Scanned with CamScanner

खतिरदारी ठाठ से होवे, रेशम सेज कुँवर सा सोवे।।
उठकर प्रातः कर स्नाना, बोले अब वापस है जाना,
हरबी सज धज हुई तैयार, लेवण को आए भरतार।
माता पिता विदाई दिन्ही, हिए लगा आशीषां दिन्ही,
पतिदेव संग चाली हरबी, महासती पदधारी हरबी।।

## दोहा

गाड़ौदा कुल तारीणी, हरबी डाली मात,
ग्राम फतेहपुर आ गई, कुँवर बन्ना के साथ।
सास ससुर की लाडली, कौशल है व्यवहार,
घर ने स्वर्ग बणा दियो, सहज प्रेम आधार।।

卐 卐

## चौपाई

जब वापस ससुराल आई, जिम्मेदारी सासु सम्भलाई,
अब बेटी घर बार सम्भालो, सारे फर्ज नियम तुम पालो।
किंतु यह सब रह गई बातां, भाग्य तो लिखता भाग्य विधाता,
भाद्रपद बिता सुखदाई, अश्विन मास गयो फलदाई।।
आया अब कार्तिक का महिना, इस महिने की कितनी महिमा,
दिन बिते कुछ समय बिताया, शुभ दिपावली का दिन आया।
महालक्ष्मी भी मन मुस्काए, खुद शक्ति, शक्ति पुजवाए,
दीपदान करते सब कोई, कृपा महालक्ष्मी की होई।।
करी गोरधन की शुभ पूजा, कौन यहाँ हरबी सम दुजा,

Scanned with CamScanner

हर त्यौहार करे विधी तांई, अमर–सुहागण हरबी बाई।
कार्तिक शुक्ल पंचमी आई, शुभ समाचार साथ में लाई,
मामा के बेटी इक न्यारी, हरबी की वो बहना प्यारी।।
"शुभ विवाह" उसका है आया, हरबी को ननिहाल बुलाया,
हर्षित हो हरबी बतलावे, मामाजी म्हाने बुलवावे।
किंतु सास ससुर मुरझावे, बिन हरबी कुछ भी ना भावे,
पर था प्रेम बड़ा बहनों में, जिसका मोल कहाँ गहनों में।।
सासु ने इक बात बताई, ध्यान से सुनती हरबी बाई,
ज्यादा दिन ननिहाल ना रूकना, तुमरे बिन घर लागे सूना।
पा आज्ञा फिर सास ससुर की, हांमी लिन्ही पति कुँवर की।

## दोहा

देख प्रेम परिवार का, हरबी करे विचार,
धन्य हूँ मैं पाकर ऐसा, प्रेम हृदय परिवार।
मान रखूँगी आपका, वचन दे रही आज,
बेटी हूँ मैं आपकी, सदा निभाऊं लाज।।

## चौपाई

बिनती है ये आपसे मेरी, माता नहीं करूंगी देरी,
आज पंचमी के दिन जाऊं और पूनम तक वापस आऊँ।
पढ़ी पत्रिका लग्न की हरबी, पढ़कर के बोली ये हरबी,
देव उठनी का दिन विवाह का, शुभ मंगल दिन है विवाह का।।

Scanned with CamScanner

## दोहा

बोली हरबी हरष के, एकादशी विचार,
शादी की है तिथी वही, होवे मंगलाचार।
पतिदेव को भेजिए लेने को, ननिहाल,
पूनम की तिथी आऊंगी, देती वचन तत्काल।।
सासु जी हाँमी दई, साथ दिए उपहार,
जाओ बेटी मामा घर, पाओ सबका प्यार।
आज्ञा पा परिवार की, हो हरबी तैयार,
चली नवलगढ़ की बाई, मन में खुशी अपार।।
पूर्ण हुआ शुभ समय में, चौथा यह अध्याय,
मानस मनसा पूरीए, वर पावे मन भाय।
धन्य–धन्य शक्ति प्रबल, संकट करे विनाश,
संकट हरणी महासती, पूर्ण करो मम आस।।
हम बालक तुम मात हो, कृपा सिंधु आधार,
चरण शरण में राखिए, वंदन बारम्बार।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ "श्री दादी देव्यै नमः" ॥ श्री हनुमन्ते नमः ॥

# श्री हरबी सती मानस मंगल पाठ

## पंचम - स्कंध

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणी नमोऽस्तु ते।।

### भाषा-टीका

बुद्धि रूप से सब लोगों के हृदय में बिराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

### दोहा

ले आज्ञा हरबी चली, आए गई ननिहाल,
देख सभी खुश हो रहे, मामा-मामी लाल,
घर में धुम है ब्याह की, होते मंगलाचार,
हरबी सबसे ही मिले, पावे सबका प्यार।

### चौपाई

सासु की आज्ञा सिर धारी, गांव नवलगढ़ को फिर चाली,
प्यारी बहना की शादी है, जो हरबी को मन भाती है।
जब पहुँची मामा के घर को, किया नमन पहले जा सबको,
सुवासणी से गले मिल रही, मन की बगीया भी है खिल रही।।
करती सबसे हर्ष विचार, करो काम की नहीं उँबार,
सारी व्यवस्था करे निज् हाथां, आ पहुँची हरबी की माता।



Scanned with CamScanner

माता से मिलती है हरखकर, हिए लगावे माता बढ़कर,
प्रेम के आँसु बहते माँ के, मिले सभी से मात परस्पर।।
अब आंसु पोछां तुम माता, मुस्काओ हर्षाओ माता,
करना हम को काम बहुत है, मामाजी का नाम बहुत है।
बहना मेरी मन को भावे, उसके काम कोई कमी ना आवे,
धुमधाम से होगी शादी, देखते रह जाएंगे बाराती।।
कर दूंगी मैं सारी व्यवस्था, सार सुधारूं सकल अवस्था,
इसी तरह बिते दिन चार, होवण लागे मंगलाचार।
हरबी निज हाथों से सजावे, निज बहना को बनड़ी बणावै,
मामा मामी भी हर्षाए, धन्य हुए है भाणजी पाए।।
हरबी निज लीला दिखलाए, कोई भी कुछ समझ ना पाए,
कमी कोई दिखने ना पावे, काम सभी खुद ही हो जावे।
सभी देखकर चकित है होते, काम किस विधि सारे होते,
छाई घर परिवार में खुशियाँ, आ पहुची बहना की सखीयाँ।।
कार्तिक की ग्यारस भी आई, यही तिथी शादी की भाई,
बहना को दुल्हन बनावे, हरबी बाई स्वयं सजावे।
हुए शगुन पूरण कर भांति, होवे फेरां मंगल गाती,
भोर हुई तब करी विदाई, बहना को डोली बैठाई।।
रोवे घर परिवार सभी ही, हरबी सबको धीर बंधाई,
बेटी तो परिवार का गहना, सभी बड़ो का है ये कहना।
छोड़ के निज बाबुल के घर को, जाना पड़ता दूजे घर को,
करी वहन की हरख विदाई, गावे हरबी बाई बधाई।।



Scanned with CamScanner

## दोहा

निज बहना को करी विदा, हरबी बाई निज हाथ,
पूर्ण हुआ शुभ समय में, शुभ विवाह सम्वाद।
मामा मामी कह रहे, होए अचंभित बात,
कैसे सब कुछ हो गया, आवे ना कुछ याद।।
बाई हरबी सुन रही, मंद–मंद मुस्काए,
शक्ति जाने अपनी माया, कोई समझ ना पाए।

## चौपाई

एहीं विधी बीत्यो दिवस सुखदाई, शक्ति ही है हरबी बाई,
चलो फतेहपुर ग्राम चलो अब, बातें होवत क्या जानो अब।
सास ससुर के मन में आवे, प्यारी बहू की याद सतावे,
बोली माता सब सुख पाओ, कहें कुँवर से अब तुम जाओ।।
जाए नवलगढ़ अब बेटा तुम, हरबी को लेकर के आओ,
दिन था कार्तिक सुदी तेरस का, वक्त सुहाना था वो सुबह का।
बोले पिता अब रथ सजवाओ, तनिक भी ज्यादा देर ना लगाओ,
माँ बोली कोई साथ भिजाओ, ठाकुर का लड़का बुलवाओ।।
जंगल बिहड़ राह में आवे, कोई परेशानी गर आवे,
एक से बेहतर दो होवेंगे, हम भी चैन से फिर सोवेंगे।
कहने लगे सेठ ठिटकाई, लाख टके की बात सुझाई,
अभी दूत इक भे जो भाई, मित्र का बेटा लुं बुलवाई।।
दूत गया ठाकुर महीं आया, सेठ का संदेशा है सुनाया,
किंतु ठाकुर मन सकुचाई, कहने लगा सुनो है भाई।



Scanned with CamScanner

पुत्र मेरा है अति बलधारी, किंतु ताप चढ़ा है भारी,
स्वस्थ नहीं ये क्या जाएगा, बिच मार्ग वापस आएगा।।
कुँवर सुनी जब सारी बातां, केहन लगे क्यूं डरती माता,
मैं भी तो हूँ अति बलकारी, क्यूँ घबरावे माता म्हारी।
फिर भी माँ का दिल अकुलाए, सुनकर बात मात समझाए,
तुम पर है विश्वास बढ़ा ही, किंतु रीत यही है सदा की।।
तुम्हे अकेला ना जाने दूँ, साथ किसी को भी भिजवा दूँ।

**दोहा**

माता की बातें सुनी, कुँवर कहे समझाए,
क्यूं चिंता करती हो माँ, कौन मुझे छू पाए।
फिर भी गर ये रीत है, तो मुझको मंजूर,
देरी मत अब तुम करो, जाना है बड़ी दूर।।

**चौपाई**

माता पिता निज मति दौड़ाए, कौन कुँवर के साथ में जाए,
एक पहर बितण के ताईं, किसको भेजें समझ ना आई।
तभी अचानक सेवक बोला, सेठ सेठानी से यूं बोला,
गाँव में एक है विप्र सुजाना, उनका बेटा बड़ा सयाना।।
बलकारी बलवान बड़ा है, बुद्धिमान, है चतुर बड़ा है,
गर तुम्हारी आज्ञा मैं पाऊं, अभी उसे जाकर ले आऊं।
मात पिता सुनकर हर्षाए, भेज दूत उसको बुलवाए,
देखा तो हो गए चकित वो, होए प्रसन्न और बोले यों।।
थोड़ा समझ का लागे हेंटा, पर ब्राह्मण है हट्टा-कट्ठा,



Scanned with CamScanner

निश्चित् गर ये साथ में जावे, चिंता हमारी सब मिट जावे।
बोला फिर वो विप्र का बेटा, मैं भी कुंवर सम आपका बेटा,
मैं जाऊंगा कुँवर के सागे, संकट में हो जाऊं आगे।।
कुँवर मित्र मुझको अति प्यारा, है बचपन का साथ हमारा,
बोला वो बातें सुखकारी, हरखे पिता हरखे महतारी।
बोला चलो अब रथ को सजाऊँ, कुँवर सारथी मैं वन जाऊँ,
विधना का ये खैल बड़ा था, कोई ना जाने क्या होना था।।
अपनी बातों में उलझाया, कोई मन की समझ ना पाया,
यूँ तो था ब्राह्मण कुमार वो, लेकिन था अति होशियार वो।
ऐसी झूठी बात बनाई, जो सबके ही मन को भाई,
लेकर जो जाऊंगा कुँवर को, पाऊँगा फ़िर इच्छित वर को।।
सेठ मुझे धनवान् करेंगे, सभी लोग सम्मान करेंगे,
उसको था धन का अति लालच, बुरी संगति का वो पायक।
बोला अब क्यूं देर लगाओ, मित्र मेरे जल्दी से आओ,
भोजन भात साथ रखवायो, घोड़ों के हित घास रखायो।।
लेकर के आशीष कुँवर जब, दरवाजे के बाहर आए,
जोर–जोर चिल्लाने लगा, घर का श्वान बुलाने लागा।
कुँवर को श्वान अति था प्यारा, वफादार कितना था न्यारा,
श्याम वर्ण का जीव रूखालु, उसका नाम रखा था कालु।।
बोले कुँवर आज्ञा को पाऊँ, कालु को भी संग ले जाऊं,
मात पिता बोले मुस्काई जा ले जा इसको भी भाई।



Scanned with CamScanner

## दोहा

समय चक्र कैसा चला, जाने क्या अब होए,
चोर बना है सारथी, समझ सका न कोय।
माता आरती थाल ले, तिलक करन को आय,
बुझा दीप, कुमकुम गिरा, हुआ अपशकुन हाय!!

## चौपाई

जब चलने की बारी आई, माता आरती लेकर आई,
दिप बुझयो माता घबराई, शगुन बिगड़ता कैसा भाई।
कुँवर बारणै पग जब घाल्यो, माता को मन भी घबरायो,
सामें सेवक छींक सुनाई, रथ के आगे बिल्ली पाई।।
काग भी जोर–जोर चिल्लावे, कोई भी कुछ समझ ना पावे,
देख अपशगुन बोली माता, मेरा तो है मन घबराता।
मत जाओ बेटा रूक जाओ, शगुन बुरे होवे मत जाओ,
सुनकर बातें कुँवर कहे यूँ, मेरी माता क्यूं डरती तू।।
अंधविश्वास मुझको ना भाए, अब कोई भी रोक ना पाए,
रखो भरोसा ईश्वर आगे, राम ही मारे राम ही राखे।
शगुन अपशगुन कुछ ना माई, क्यूं तुम्हरी मति है भरमाई,
अब मत मात परीक्षा लेवो, अब जाने की आज्ञा देवो।।

## दोहा

देख अपशगुन ना रूके, कुँवर चले तत्काल,
आगे रथ में बैठा था, कपटी ब्राह्मण लाल।
कितना ऊँचा पद जिसका, पर लालच की मार,
शूद्र समान है जीवन चाहे नर हो चाहे नार।।



Scanned with CamScanner

माता पिता को कर नमन, रथ पर हुए सवार,
कैसे बनूं धनवान मैं, ब्राह्मण करे विचार।

## चौपाई

चले कुँवर रथ पर असवारा, कालु श्वान साथ में प्यारा,
ब्राह्मण मन ही मन सकुचाए, अपनी दुर्बुद्धि दौड़ाए।
सेठ से गर इनाम में पाऊं, ज्यादा से ज्यादा क्या पाऊँ,
उससे ज्यादा तो रथ माहीं, करे विचार हरू क्षण माहीं।।
कुँवर बदन पर कितना सोना, ना चाहुँ ये मौका खोना,
पहले तो मैं प्रेम दिखाऊँ, गर ना माने तो धमकाऊँ।
निती मन में उपजे भाई, आ पहुँचे वो वन के माई,
था संध्या का समय अनुमाना, बोले कुँवर सुनो धर ध्याना।।
कितना जंगल है सुनसान, थोड़ा कर लें यही विश्राम,
घोड़े भी थक गए हैं अपने, भूखे प्यासे हम दिन भर से।
जगह कोई देखो सुखदाई, डेरा वहीं लगा लो भाई,
ब्राह्मण एक वृक्ष पही आया, रोका रथ अलाव लगाया।।

जय दादी की

## दोहा

एक खेजड़ी पास में, भूमि समतल खास,
वहीं लगायो डेरा कपटी, करे कुँवर संग वास।
भोजन किन्हा संयम से, जीव सभी सुख सार,
इतने में वो ब्राह्मण बोला, कर मति दृढ़ विचार।।
यहाँ यदि लुटूं सोना, मदद करे ना कोए,
घोर है जंगल कुँवर अकेला, आँख मूंद कर सोए। ।



Scanned with CamScanner

## चौपाई

कपटी निती करी उपाई, दे दो सोना मुझे सब भाई,
सुनकर कुँवर बात फरमाए, मित्र तुम्हें लालच मति खाए।
क्यूं ब्राह्मण लालच मन रखता, कैसे बातें मुख से कहता,
पर उस दुष्ट ने एक ना मानी, हट्टा कट्ठा था बलवानी।।
बोला कुछ नहीं सुनना चाहूँ, आभुषण तुम्हरे मैं चाहुँ,
साथ कुँवर बांधी तलवार, हाथ थाम बोले ललकार।
पाप ये मैं करने ना दूँगा, तुझको दण्ड इसी पल दूंगा,
फिर दोनों में छिड़ी लड़ाई, कालु श्वान देखता भाई।।
स्वामी भक्ति का परिचय पाया, ब्राह्मण हाथ को मुख में दबाया,
पर ब्राह्मण आगे लाचार, थी हाथों में जो तलवार।
श्वान हिए के पार घुसाई, प्राण छोड़ गिरयो धरा पे जाई,
पौरूष बल लड़ते वो दौनों, तलवारें चमकाते दौनों।।
पर ब्राह्मण सुत करे चतुराई, देखे बल जब कुँवर सवाई,
मिट्टी उठा आंख महीं डाली, विचलित कुँवर हुए बलशाली।
मौका पा फिर वार कियो है, खन्ज्जर सिने पार कियो है,
कुँवर गिरे भुमि पर जाई, विधना कैसी विधी रचाई।।
कंचन काया कोमल ताँई, जान की बाजी कुँवर लगाई।

## दोहा

कुँवर सिधारे, प्राण तजे, हाय! होनी बलवान्,
कैसी माया रची विधाता, कौन सका है जान।



Scanned with CamScanner

लोभी मुस्कायो तभी, देख जीत निज हाथ,
आभूषण भेला कर्‌यो, और सोचे ये बात।।
जाऊँ नवलगढ़ इसी घड़ी, लाऊँ हरबी नार,
उसके भी जेवर ले लूंगा, ले लुँ सब उपहार।
यह मानस करके चला, हरबी बाई के द्वार,
लालच पात्र भरे नहीं, चाहे भरे भण्डार।।
कुँवर देह को दबा दियो, खैर वृक्ष के मूल,
सुन्दर देह कुँवर की दाबी, उपर डाल्यो त्रण मूल।

## चौपाई

लालच मन अति आयो भाई, कुँवर देहभूमि में दबाई,
चल्यो नवलगढ़ लेवण ताईं, ले आऊँ अब हरबी बाई।
उसको भी लाकर के मारूँ, संग पति उसको भी तारूँ,
खुब स्वर्ण पा जाऊँगा मैं, सेठ धनी बन जाऊँगा मैं।।
सोच के रथ हांक्यों वो पापी, चल्यो नवलगढ़ को संतापी,
उधर जग्यो सत हरबी माहीं, देख्यो स्वप्न तेहीं रात अंधारी।
प्रातः जब ब्राह्मण घर आयो, मामा जी स्वागत् करवायो,
पूछे कहाँ कुँवर है हमारे, क्यों ना आए साथ तुम्हारे।।
ब्राह्मण बोला मीठी वाणी, आए थे वो संग में लानी,
किंतु राह में ताप चढ्यो जब, वापस उनको भेज दियो तब।
अब बाई की करो विदाई, बहुत दूर जाना है भाई,
मामा मामी करे तैयारी, बोली हरबी से महतारी।।



Scanned with CamScanner

## दोहा

ज्यूं देख्यो मुख हरबी को, होत् क्रोध से लाल,
घबराई माता तभी, देख देख कर हाल।
मामा मामी भी डरे, जान ना पाए कोए,
क्या हो गया है हरबी को, काहें विचलित होए।।

## चौपाई

लेवण को जब माता चाली, रूप देखकर काया हाली,
हरबी तो ज्वाला सम दमके, आंखे अंगारों सी चमके।
केश खुले है घोर रूप है, है विचित्र क्रोधी स्वरूप है,
अंगना में आकर ललकारी, हत्यारा आया है भारी।।
पूछे डरते मामा–मामी, क्यों कहती बेटी अपवाणी,
ब्राह्मण पर क्यूँ दोष लगाओ, कुछ तो खोल हमें समझाओ।
तब हरबी सब बात सुनाई, घटी जो घटना दिन्हीं बताई,
हरबी को क्रोधित जब पायो, एक कमरे में बंद करायो।।
टूटी सांकल खुल गया ताला, दिन्यो परचो माँ तत्काला,
प्रथम परचो ननिहाल बतायो, सबने माँ निज सत दिखलायो।
सुनकरं के ब्राह्मण सुत बोला, काहे मुझको झूठा तोला,
विप्र जाति का कर लो मान, क्यूँ करती मेरा अपमान।।
तब हरबी निज सत दिखलाया, क्रोधित चण्डी रूप बनाया,
डरकर ब्राह्मण भागन लागा, मन में उसके भय था जागा।



Scanned with CamScanner

रोक लियो सेवक सब जाई, ब्राह्मण बेटा बोला भाई,
मुझ पर क्यूं इल्जाम लगाओं, क्या सबूत है मुझे दिखाओ।।
सुन हरबी शक्ति दिखलाई, सांच को आंच नहीं है भाई।

## दोहा

लेकर सबको साथ में, संग ले ब्राह्मण का लाल,
जा पहुँची वहीं स्थान पर, श्री हरबी तत्काल।

## चौपाई

निज स्वामी की टेर लगाई, भूमि वृक्ष मूल खुदवाई,
निकली काया कुँवर पति की, देख के आंखें भरी सती की।
सब क्रोधित हो बोले मारो, पापी ब्राह्मण पल में तारो,
तब पापी शरणागत आयो, मन ही मन अब तो पछतायो।।
जाय पड़्यो हरबी पग तांई, बोल्यो माफ करो महामाई,
मैं लालच में फंस सब किन्हा, निज करनी का दण्ड है लिन्हा।
तुम शक्ति हरबी सुखदाई, कर दो क्षमा भूल सब माई,
पुत कपूत हुए अति ताई, मात् कुमाता हो ना भाई।।
निज करनी का फल भुगतेगा, अपना पाप ये खुद भुगतेगा,
इतना कह दिन्हा छुड़वाई, तभी विप्र मन से उकताई।
जाय पड़्यो एक कूप के माहीं, आत्म त्याग किन्हो खुद तांहीं,
सब रोवे, सब शोर मचावे, तब हरबी बोली सुनो प्यारे।।
अब मैं सती होएकर चाहुँ, निज पति की काया मिल जाऊँ।



Scanned with CamScanner

## दोहा

सब बोले रोकन लगे, ये क्या सुझी तोए,
आत्महत्या है ये बेटी, काया पाप डुबोए।
तब हरबी बोली सुनो, माया अपरम्पार,
निज सत योग दिखाऊँ मैं, सुन लो सब नर नार।।
खबर कराओ सासरे, लो सबको बुलवाए,
भागे आए सुन सभी, नैणा निर बहाए।
पर हरबी रोवे नहीं, सजी सोलह श्रृंगार,
निज सत की महिमा कहे, शक्ति रूप अवतार।।
आई थी करने लीला, पूर्ण समय अब जान,
सतियों का सत पुजना, सुन ले सकल जहान।
बल से करना ना सती, नारी है बलवान,
पाप है जिसका ना मिले, तिनों लोक निदान।।
निज पति काया गोद ले, लिन्हीं चिता सजाए,
सार संवार्‌यो रूप को, निज शक्ति दिखलाए।
देकर पाँच परिक्रमा, साक्षी सूर्य की होए,
चिता चढ़ी शक्ति प्रबल, भेद ना जाने कोए।।
सुदी कार्तिक चौदस तिथी, श्रेष्ठ समय शुभ जान,
बोली श्री हरबी बाई, सुनो सभी दे ध्यान।

## चौपाई

मैं तो शक्ति की अवतारी, लियो धरा पर जन्म सुखारी,
इतनी ही लीला थी मेरी, अब जाऊंगी करूं ना देरी।



Scanned with CamScanner

चूड़ा मेहन्दी चुनड़ लाल, सोलह सजे रूप श्रृंगार,
देवन सभी मिल साख भराई, धन्य–धन्य श्री हरबी माई।।
गगन में देव खड़े मुस्काए, नभ ते सुमन सभी बरसाए,
सकल लोक जयकार उचारी, मंगल आरती सभी उतारी।

## दोहा

तब निज सत का ध्यान लगा, योग प्रबल संयोग,
अग्नि प्रकट करी सती, देखे अचंभित् लोग।

## चौपाई

धुं–धुं कर अग्नि बड़ी भारी, देखते रह गए नर और नारी,
पल भर में सब राख ही पाई, सत दिखलायो हरबी बाई।
मात पिता रोवे मुरझाई, सास ससुर हिए चैन न आई,
व्याकुलता देखी जब माई, प्रगट होए कर वचन सुनाई।।
अब सुन लो कुछ बात हमारी, कहने लगी शक्ति अवतारी,
मत रोवो सब ही मुस्काओ, यही भुमि मम धाम बणाओ।
मैं यही सदा निवास करूंगी, दुखियारों को सुखी करूंगी,
दिश्नाऊँ की भुमि महान्, होगा सबका ही कल्याण।।
जब–जब सत की होवे हानि, लोभी, कामी होते प्राणी,
तब–तब ही अवतार बनाऊँ, नाना विधी धरती पर आऊँ।
देखो धाम बने कई मेरे, देखो नाम हुई कई मेरे,
हर कुल वंश को तारती आई, चारो युग से ही महामाई।।
कलयुग में तो तेज सवाया, नाना रूप धरे महामाया,
एंही प्रकार निज शक्ति दिखाई, श्री हरबी डाली सती माई।



Scanned with CamScanner

अब कुछ नियम खास मम मानो, दिश्नाऊं मम महिमा जानो,
पीताम्बर विप्रन को प्यारा, किंतु मुझको नहीं सँवारा।।
पीली कुछ वस्तु ना लागे, ब्राह्मण भी सेवक ना राखे,
सेवा करना मम सब कोई, लेना पूजा थाल संजोई।
मैं माता कई पुत्र हैं प्यारे, बुरे भले सब कोई म्हारे,
श्राप नहीं कुछ भी मम ओरा, किंतु पाप विप्र कियो घोरा।।
एहीं कारण यह नियम बताई, युग–युग याद यही रह जाई,
माता सम सबको ही पालुँ, निज सत् शक्ति से सम्भालुं।
जो भी दुखिया द्वारे आए, सत्य हृदय मेरो ध्यान लगाए,
तिनके कष्ट हरूंगी सारे, पूरण काम करूँगी सारे।।
जगमग ज्योति नित की जागे, झालर, शंख, नगाड़ा बाजे,
नवमी, चौदस, मावस, ध्यावे, मनवांछित पूरण सब पावे।
वृक्ष जहां पति देह दबाई, सती हुई जहाँ हरबी माई,
वो स्थान चमत्कारी है, वृक्ष की भी महिमा भारी है।।
दिश्नाऊं तो धाम बण्यो है, दर्शन से सब काम बण्यो है,
धन्य–धन्य श्री हरबी डाली, निज सेवक की करे प्रतिपाली।
सब मिल जै–जैकार उचारी, मुस्कावे शक्ति अवतारी।

## दोहा

निज परिचय बतलाय कर, शक्ति दया निधान,
सबको दे वरदान माँ, हो गई अंर्तध्यान।
तब से लेकर आज तक, जागे ज्योत अपार,
परचे देवे दादी जी, नित के कई हजार।।



Scanned with CamScanner

पूर्ण भयो इस भांति यहीं मानस मंगल पाठ,
पढ़े सुने धर ध्यान जो, उसके होते ठाठ।
नवमी मावस पाठ करे, घर में ज्योत जगाय,
कारज सब पूरण करे, खुद दादी जी आय।।
कोई भी बाधा अड़े, संकट हो बलवान्,
करो ध्यावना दादी की, बात सुनो धर ध्यान।
ममतामई मातेश्वरी, श्री हरबी डाली नाम,
शक्ति की अवतार को, झुक–झुक करूँ प्रणाम।
"तेजू" मानस रच दियो, हुक्म दियो माँ आप,
मति अनुसार कथा कही, लिखवाई खुद आप।।
चिंता नहीं चिंतन करो, हरे कोटि दुख पाप,
भाव भक्ति सेवा करो, दादी हरे संताप।
मानस मंगल पाठ की, कथा करो धर ध्यान,
अन्न, धन, पुत्र, पौत्र, सब पावो, देती दया निधान।।
जय श्री हरबी डाली माँ, जगदम्बा अवतार,
श्रद्धा भाव भर्‌यो चरणां में, वंदन बारम्बार।
बोलो हरबी डाली सती मात की जय

**" इति शुभम् "**



Scanned with CamScanner

## "श्री हरबी डाली सती दादीजी की आरती"

जय हरबी डाली सती माता, मैया जय हरबी डाली सती माता।
जो जन तुको ध्यावे, सुख सम्पति पाता।। जय.....

मकराणे का मन्दिर तेरा, मन को अति भाता।
एक झलक जो पावे, संकट कट जाता।। जय.....

मेहन्दी रोली चुड़ा चुनड़ी, भेंट करें तेरे।
तन मन ध्यान अर्पण कर, द्वार खड़ा तेरे।। जय....

दिसनाऊ धाम तुम्हारा, सब जग विख्याता।
महिमा अमर तुम्हारी, भक्त जन सुखदाता।। जय....

दूर–दूर से यात्री आकर, मन में हर्षाता।
उर आनन्द अति उपजे, दुखड़ा मिट जाता। जय.....

जो जन सांझ सवेरे, तुम को ही ध्याता।
मन वांछित फल पाकर, भव से तर जाता। जय.....

जय दादी की

दुःखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किए।
बहु धन–धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए।। जय....

"नित्य आनन्द" थारी, आरती मैं गाता।
कृपा करो जा–जन पर, हे भाग्य विधाता।। जय.....

हरबी डाली सतीजी की आरती, जो कोई नर गाता।
सुख आनन्द अति उपजे, भव पार उतर जाता।। जय....



Scanned with CamScanner

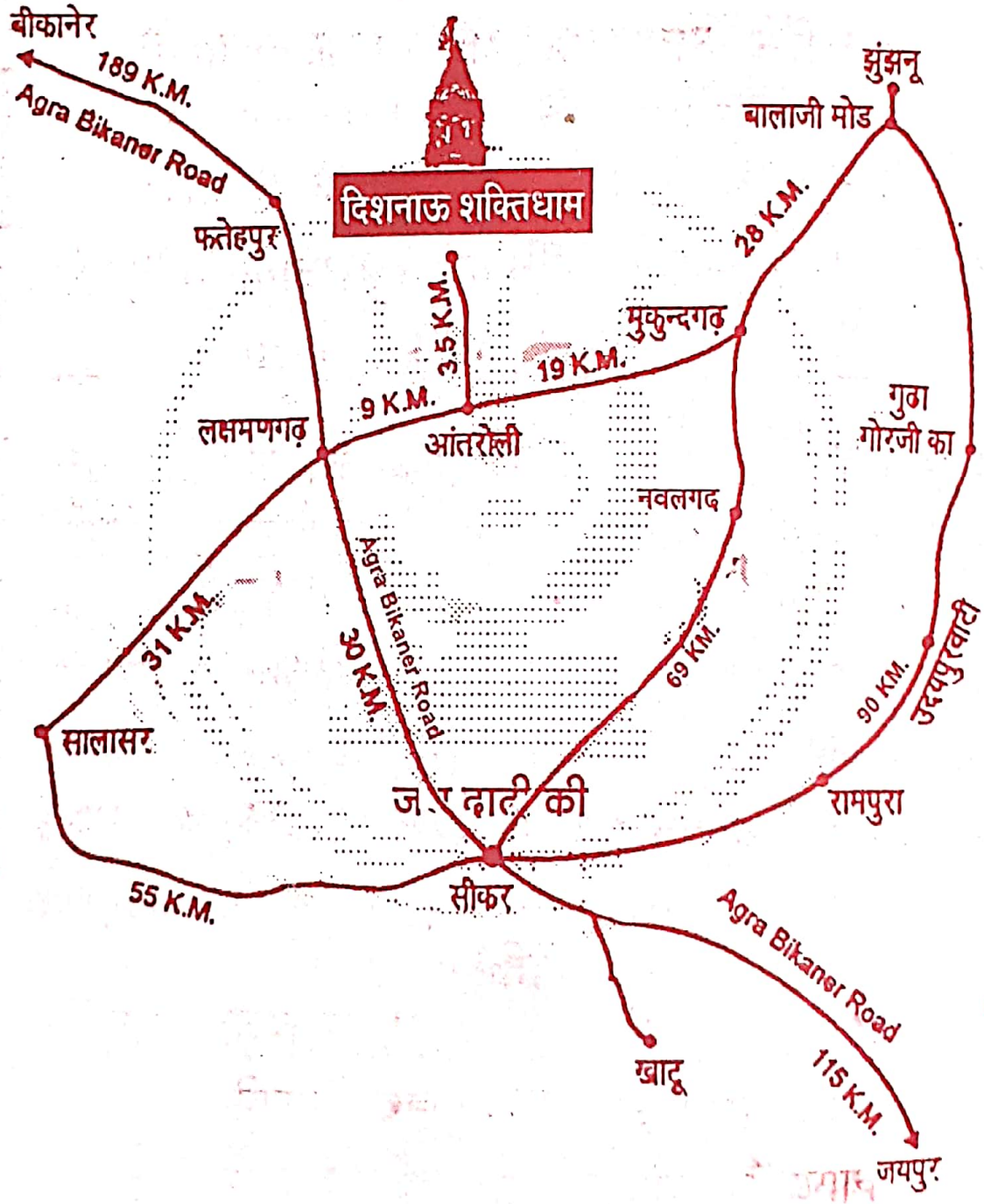

卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐 जय दादी की 卐

## जयपुर से दिशनाऊ शक्तिधाम जाने का नक्शा




सालासर से लक्ष्मण गढ़ होते हुए आंतरोली से दिशनाऊ शक्तिधाम
दिशनाऊ शक्तिधाम से मुकुन्दगढ़ होते हुए बालाजी मोड़ से झुंझनु